पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण)

संवाद पत्र

अंक: 56वाँ अंक (जनवरी-जून, 2022)

संरक्षक: श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक (निर्माण)

मुख्य संपादक: श्री राजेश कुमार, मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण)

उप संपादक: श्री दीपक कुमार गुप्ता, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण)

संपादक: श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी (निर्माण)

विषय अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.	रचनाकार
1.	महाप्रबंधक (निर्माण) का संदेश	1	--
2.	मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण) के कलम से	2	--
3.	उप मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण) की लेखनी से	3	--
4.	संवाद पत्र - संपादकीय	4	--
5.	गणतंत्र दिवस, 2022	5	--
6.	निर्माण संगठन की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ	6-7	--
7.	राजभाषा संबंधी उपलब्धियाँ	7-8	--
8.	असम धरा सरस हरियाली (कविता)	8	श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण
8.	क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	9	--
9.	क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	10-11	--
10.	एक से सौ तक संख्यावाचक हिंदी तथा संस्कृत का मानक रूप	11	--
11.	हिंदी कार्याशालाएँ	12-15	--
12.	दीमापुर-कोहिमा सेक्शन पर संक्षिप्त टिप्पणी	16	श्री मानस रंजन महापात्र, सीनि.से.इंजी./नि.
13.	नव वर्ष	17	श्री प्रशांत कुमार, सीनि.से.इंजी./नि.अभिकल्प
14.	तवांग की सैर	18-26	मो.आमीर परवेज,सीनि.से.इंजी./नि./योजना
15.	आओ प्रिये नवजीवन का सृजन करें हम	27	श्रीमती बिन्दु कुमार,पत्नी श्री रा.रं.कुमार, राधि/नि.
16.	एक कली दो पत्तियाँ	28-29	श्रीमती अनिन्दिता सिन्हा, सहा.कार्यपालक इंजी./नि. / योजना-1
17.	गजल	30	श्री मुकेश कुमार, डाटा इंट्री परिचालक(लेखा परीक्षा)/ निर्माण
18.	नदी की धारा में एच.एफ.एल. का निर्धारण	31-41	श्री कौस्तभ कलिता, सीनि.से.इंजी./नि./योजना-1
19.	पिताजी	42	श्री मुन्नी लाल गुप्त,सुपुत्र श्री मुकेश कुमार गुप्त, डाटा इंट्री परिचालक(लेखा परीक्षा)/निर्माण
20.	मनमोहक रेल यात्रा	42-46	श्री कुलदीप तिवारी, सीनि.से.इंजी./निर्माण/ अभिकल्प
21.	ओस की बूंदे	47	श्री रामकेश मीना, सीनि.से.इंजी./नि./अभिकल्प
22.	पूर्वोत्तर सीमा रेल की राजभाषा संगठन का अविर्भाव एवं विकास	48-51	श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण
23.	प्रशासनिक शब्दावली (अंग्रेजी-हिंदी)	51	वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार

सब लोग अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए हिंदी को साधारण भाषा के रूप में पढ़ें।

- अरविन्द घोष

महाप्रबंधक (निर्माण) का संदेश

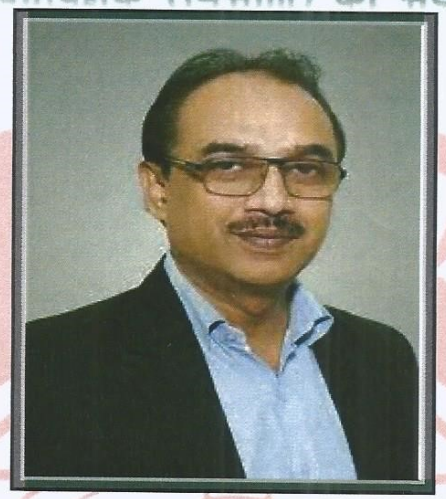

मुझे यह सूचित करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हिंदी भाषा की मौलिक सोच को आगे बढ़ाने के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेल निर्माण संगठन के राजभाषा विभाग द्वारा नव वर्ष 2022 में नए कलेवर एवं नए रंग में आपके समक्ष **"संवाद पत्र"** की ई-पत्रिका प्रस्तुत की जा रही है। हिंदी भाषा केवल संप्रेषण का सशक्त माध्यम ही नहीं है अपितु यह एक व्यक्ति, सभ्यता एवं पहचान का मुख्य आधार भी है। इस पत्रिका के माध्यम से मैं निर्माण संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने के लिए संवाहक के रूप में कार्य करने का सुझाव देता हूँ। संवाद पत्र के इस अंक में निर्माण संगठन के उदीयमान लेखकों को यथोचित स्थान देने का प्रयास किया गया है।

यह सूचना प्रौद्योगिकी का वर्चुअल युग है जो जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। चूँकि, कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना आसान होता जा रहा है, अत: इस माध्यम का इष्टतम लाभ उठाकर कार्यालय संबंधी विभिन्न कार्य को कंप्यूटर पर हिंदी में ही करने का अधिकतम प्रयास करें और डिजिटल भारत का सपना साकार करें। इस पत्रिका के माध्यम से हम अपने रेलकर्मियों से बेहतर संवाद कायम कर उनमें कार्य की अच्छी समझ पैदा कर सकते हैं और भावनात्मक रूप से एक सुगठित टीम बना सकते हैं। इस ई-पत्रिका को निरंतर उपयोगी बनाने के लिए तथा पाठकों की साहित्यिक जिज्ञासा के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होने के लिए निर्माण संगठन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इसमें भरपूर सहयोग करें। निर्माण संगठन को तेजी से आगे बढ़ने के लिए हिंदी भाषा की उन्नति अति आवश्यक है। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ठीक ही कहा है कि *"निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल"।*

सभी पाठकों को वर्ष, 2022 की शेष अवधि की अनेकों शुभकामनाएँ।

अंशुल गुप्ता
महाप्रबंधक (निर्माण)

मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण) के कलम से

वर्ष 2022 में संवाद पत्र ई-पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। रेल गति, वेग एवं जीवंतता का प्रतीक है जो समाज को भी जीवंत बनाता आया है। यह परिवारों एवं सगे-संबंधियों को जोड़ने का माध्यम बनता है। ठीक इसी प्रकार हिंदी भी देश के करोड़ों लोगों को आपस में जोड़ने एवं एक दूसरे को मिलने का अच्छा अवसर प्रदान करता है। सूचना प्रौद्योगिकी का जाल भारत के लगभग हर क्षेत्र में फैल चुका है।

सामान्यत: यह धारणा बन गयी है कि हिंदी में ज्ञान-विज्ञान से संबंधित पठन-पाठन की सामग्री पर्याप्त नहीं हैं या हिंदी भाषा तकनीकी कार्य या तकनीकी शिक्षा के लिए समर्थ नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह जान-बुझकर किया हुआ दुष्प्रचार है, जिस पर हमें सकारात्मक पहल करते हुए चली आ रही ऐसी सोंच को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हिंदी के प्रचार-प्रसार और इसके व्यवहार को बढ़ाने के लिए सभी वैकल्पिक साधनों का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे। हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण करने की शक्ति भी है और वैज्ञानिक दृष्टि से भी देवनागरी लिपि अत्यन्त सटीक है। संपूर्ण विश्व में वसुधैव कुटुंबकम की परिकल्पना को साकार करने की अपार शक्ति इस भाषा में है। आइए! हम सब मिलकर पूर्वोत्तर सीमा रेल, निर्माण संगठन में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर इस बात को मूर्त रूप देने का पुनित कर्तव्य निभाएँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

RAJESH KUMAR

Digitally signed by RAJESH KUMAR
Date: 2022.08.30 15:41:43 +05'30'

राजेश कुमार
मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण)
एवं मुख्य इंजीनियर/निर्माण-9

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण) की लेखनी से

यह प्रसन्नता का विषय है कि निर्माण संगठन का संवाद पत्र ई- पत्रिका के रूप में आपके सामने दृष्टव्य है। हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का प्रयास करते हैं। यह पत्रिका भी उसी का प्रतिबिम्ब है। पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) संगठन "ग" क्षेत्र में स्थित ऐसा कार्यालय है जो निर्माण संबंधी कार्य में तो जुटा रहता है परन्तु अपने इन्हीं व्यस्त कार्यों के बीच राजभाषा हिंदी का अनुप्रयोग भी उतनी ही सजगता से करता है। इसके लिए मैं निर्माण संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

तेजी से बदलते इस तकनीकी युग में राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर की संवाहक हिंदी भी इस प्रगति के साथ चल रही है। आज कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना बहुत आसान हो गया है। अब न केवल इंटेलिजेंट की-बोर्ड आ गए हैं, बल्कि बोलकर टाइप करने की सुविधा वॉयस टाइपिंग भी उपलब्ध हो गई है। हमें इस सुविधा का लाभ उठाते हुए निर्माण कार्यालय के दैनिक कार्य में हिंदी का मूल रूप से प्रयोग बढ़ाना चाहिए। ऐसा करने से हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन भी ठीक से कर पाएँगे। मैं इस पत्रिका के माध्यम से निर्माण संगठन में कार्यरत ऐसे सभी कर्मचारियों से हिंदी में प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत जैसे पाठ्यक्रमों का नियमित, गहन, पत्राचार और लीला के माध्यम से अवश्य प्रशिक्षण प्राप्त कर लें जो हिंदी में अप्रशिक्षित हैं अर्थात् जो कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करने से अब तक वंचित रह गए हैं।

अंत में, मैं सभी के लिए वर्ष की शेष अवधि की मंगलकामना करता हूँ।

DEEPAK KUMAR GUPTA
Digitally signed by DEEPAK KUMAR GUPTA
Date: 2022.08.22 13:00:01 +05'30'

दीपक कुमार गुप्ता
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण) एवं
उप मुख्य बिजली इंजीनियर (निर्माण)/विद्युतीकरण

संवाद पत्र - संपादकीय

संवाद पत्र की ई-पत्रिका को प्रस्तुत करते हुए सर्वप्रथम मैं अपने महाप्रबंधक (निर्माण) महोदय के साथ-साथ निर्माण संगठन के सभी वरिष्ठ, कनिष्ठ अधिकारियों के साथ सभी कर्मचारियों को वर्ष 2022 की शेष अवधि के लिए मंगल कामना के साथ-साथ आशा करता हूँ कि इस वर्ष की शेष अवधि में हम सभी मिलकर राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के सभी निर्धारित लक्ष्यों को यथार्थ रूप में प्राप्त करने के लिए भरपूर प्रयास करेंगे। संवाद पत्र के माध्यम से निर्माण संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि महाप्रबंधक (निर्माण) महोदय द्वारा परिपत्रित मूल रूप से अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने संबंधी निर्देश का सही-सही अनुपालन किया जाए ताकि राजभाषा के क्षेत्र में भी निर्माण संगठन अग्रणी भूमिका निभा सके।

मैं पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आपके रचनात्मक अवदान से ही यह पत्रिका मैं नियमित रूप से निकाल पाने में सक्षम हो पा रहा हूँ। आपके तकनीकी एवं ज्ञानवर्धन लेखों से कर्मचारियों की चिंतन क्षमता एवं गुणवत्ता में भी निखार आ रहा है। मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जो अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा का प्रयोग करते हैं और राजभाषा के सभी कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग प्रदान करते हैं।

मैं अपने संरक्षक महाप्रबंधक (निर्माण) महोदय के प्रति आत्मीय आदर प्रकट करना चाहूँगा, जिन्होंने पद ग्रहण करने के साथ राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साहजनक अभिव्यक्ति की और हमारा मनोबल बढ़ाया। आपके कुशल नेतृत्व और मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण) महोदय के मार्गदर्शन में इस अंक को स्वरूप देते हुए मुझे खुशी एवं संतोष का अनुभव हो रहा है। आशा है, आपकी आकांक्षा के अनुरूप मैं पत्रिका को और अच्छा बना पाने में सफल हो पाऊँगा।

इसी आशा के साथ कि वर्ष 2022 की शेष अवधि आशानुरूप हो।

Rajesh Ranjan Kumar

Digitally signed by Rajesh Ranjan Kumar
Date: 2022.08.22 12:06:42 +05'30'

राजेश रंजन कुमार
राजभाषा अधिकारी (निर्माण)

गणतंत्र दिवस, 2022

महाप्रबंधक (निर्माण) श्री सुनील शर्मा के नेतृत्व में 26 जनवरी, 2022 को निर्माण संगठन में 73वाँ गणतंत्र दिवस मनाया गया। इस शुभअवसर पर निर्माण संगठन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। महाप्रबंधक (निर्माण) ने इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के पश्चात् अपना संबोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि 1950 में हम भारत के नागरिक अपने आप को एक ऐसा संविधान प्रदान किए हैं जो हमारे नियमों और कानूनों, हमारे अधिकारों और विशेषाधिकारों, हमारे कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के लिए मार्गदर्शक दस्तावेज है। कोविड-19 जैसी प्रतिकूल परिस्थिति में पिछले साल देश के विभिन्न हिस्सों में जीवन रक्षक ऑक्सीजन के त्वरित परिवहन में भारतीय रेल द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को गर्व और बड़ी संतुष्टी के साथ याद किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमारे संगठन को पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानियों को रेल लिंक प्रदान कर आपस में जोड़ने की परियोजनाओं को क्रियान्वित करने की भारी जिम्मेदारी सौंपी गयी है। उन्होंने कहा कि पिछले नौ महीनों में हमने 151.63 कि.मी. नई लाइनें/दोहरीकरण चालू कर दी है जो पिछले वर्ष की उपलब्धि से 2.25 गुणा अधिक है। चालू वित्त वर्ष की शेष अवधि के दौरान 134 कि.मी. की नई लाइनें/दोहरीकरण कमीशनिंग के लिए तैयार है। हम ट्रांस-एशियन रेल नेटवर्क की स्थापना के लिए कई अंतर्राष्ट्रीय कनेक्टिविटी परियोजनाओं को क्रियान्वित कर रहे हैं। इनमें बांगलादेश, नेपाल के साथ कनेक्टिविटी शामिल है। म्यामार और भूटान के साथ रेल संपर्क स्थापित करने के लिए भी सर्वेक्षण जारी है। अंत में महाप्रबंधक (निर्माण) ने उपलब्धियों को साकार करने में सहयोग देनेवाले सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, एजेंसियों, रेल सुरक्षा बल, यूनियनों, महिला कल्याण समितियों एवं रेल परिवार के सभी सदस्यों का आभार जताया।

निर्माण संगठन की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

1. जिरीबाम-इंफाल नई लाइन परियोजना के वांगईचुंगपाओ से रानी गैदिनलियू खंड में दिनांक 17.01.2022 को रोलिंग प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी की गई और पहली मालगाड़ी दिनांक 27.01.2022 को रानी गैदिनलियू स्टेशन पर पहुँची। वांगईचुंगपाओ-खोंगसांग (44.30 कि.मी.) खंड को अब मार्च, 2022 तक चालू करने का प्रयास किया जा रहा है।
2. पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) ने वित्तीय वर्ष के पहले 10 (दस) महीने में अर्थात् जनवरी, 2022 तक कुल 148.28 कि.मी. नई लाइन/ दोहरीकरण को चालू किया है। प्रथम 10 (दस) महीने के दौरान की उपलब्धि पहले से ही पिछले वर्ष की उपलब्धि से 2.25 गुना अधिक है। पूर्वोत्तर सीमा रेल 275 कि.मी. नई लाइन/ दोहरीकरण को चालू करने के लिए चालू वित्त वर्ष के दौरान कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर के गंभीर प्रतिकूल प्रभाव के बावजूद इसे पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है।
3. पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) मुख्यालय कार्यालय में 73वाँ गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया तथा अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की उपस्थिति में महाप्रबंधक/ निर्माण द्वारा "राष्ट्रीय ध्वज" फहराया गया।
4. रेल बोर्ड के अधिकारियों के साथ दिनांक 17.01.2022 को बैठक की गयी।
5. अररिया-गलगलिया परियोजना का दिनांक 22.01.2022 को निरीक्षण किया गया।
6. तेतेलिया-बर्नीहाट-शिलाँग नई लाइन परियोजना का दिनांक 27.01.2022 को निरीक्षण किया गया
7. भैरवी-सैरंग नई लाइन परियोजना का दिनांक 29.01.2022, 30.01.2022 और 31.01.2022 को निरीक्षण किया गया।
8. न्यू बंगाईगाँव-गोवालपाड़ा टाउन-गुवाहाटी बड़ी लाइन दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत पंचरत्न-दुधनोई (28.12 कि.मी.) का दिनांक 27.02.2022 को रेल संरक्षा आयुक्त का सफलतापूर्वक निरीक्षण पूरा हुआ तथा दिनांक 28.02.2022 को 100 कि.मी. प्रति घंटे का प्राधिकार प्राप्त हुआ।
9. फरवरी,2022 तक वित्तीय वर्ष के प्रथम 11 महीने में पू.सी.रेल (निर्माण) द्वारा कुल 178 कि.मी. की नई लाइन/दोहरीकरण चालू की गयी। पिछले वर्ष की उपलब्धि की तुलना में प्रथम 11 महीने के दौरान 2.7 गुना की उपलब्धि पहले ही हासिल हो चुकी है। आगे, मार्च,2022 के महीने में डिगारू-होजाई दोहरीकरण परियोजना अर्थात् जागीरोड-धरमतुल (18.75 कि.मी.) के अंतिम चरण को पूरा करने का लक्ष्य है। कोविड 19 महामारी की दूसरी लहर के कारण वित्तीय वर्ष के शुरूआत में गंभीर विपरीत प्रभाव पड़ने के बावजूद, चालू वित्तीय वर्ष के दौरान इस रेल द्वारा 196 कि.मी. की नई लाइन/दोहरीकरण चालू करने का कार्य पूरा करने का लक्ष्य है।
10. ऋषिकेश-कामप्रयाग नई लाइन के सुरंग निर्माण स्थल का दिनांक 09.02.2022 तथा 10.02.2022 को निरीक्षण किया गया और अधिकारियों के साथ बैठक की गयी।
11. विदेश मंत्रालय और रेल बोर्ड के अधिकारियों के बीच दिनांक 11.02.2022 को बैठक की गयी।
12. सेवक-रंगपो, अगरतला-अखौरा और जोगबनी-विराटनगर परियोजना के लिए मुख्य प्रबंध निदेशक/इरकॉन के साथ दिनांक 12.02.2022 को समीक्षा बैठक की गयी।
13. अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन (आरडीएसओ) के महानिदेशक के साथ दिनांक 21.02.2022 को बैठक की गयी।
14. चालू लाइनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के विषय पर दिनांक 24.02.2022 को रंगिया होते हुए अगठोरी-न्यू बंगाईगाँव दोहरीकरण लाइन खण्ड का निरीक्षण खण्ड किया गया।
15. डिगारू-होजाई बड़ी लाइन दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत जागीरोड-धरमतुल (18.66 कि.मी.) का रेल संरक्षा आयुक्त का सफलतापूर्वक निरीक्षण पूरा हुआ तथा दिनांक 14.03.2022 को 100 कि.मी. प्रति घंटे का प्राधिकार प्राप्त हुआ।
16. मार्च,2022 तक वित्तीय वर्ष में पू.सी.रेल (निर्माण) द्वारा कुल 195.28 कि.मी. की नई

17. लाइन/दोहरीकरण चालू की गयी। पिछले वर्ष की उपलब्धि की तुलना में वित्तीय वर्ष के दौरान 3.13 गुना अधिक उपलब्धि पहले ही हासिल हो चुकी है।
18. फ्लैश बट्ट वेल्डिंग प्लांट, न्यू बंगाईगाँव और रंगिया होकर न्यू बंगाईगाँव अगठोरी दोहरी लाइन खण्ड का दिनांक 05.03.2022 को विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया गया।
19. मुख्य सचिव, बिहार के साथ दिनांक 07.03.2022 को बैठक की गयी।
20. रेल बोर्ड के अधिकारियों के साथ दिनांक 11.03.2022 को बैठक की गयी।
21. सेवक-रंगपो एवं अगरतला-अखौरा परियोजना के लिए मुख्य प्रबंध निदेशक/इरकॉन के साथ दिनांक 12.03.2022 को समीक्षा बैठक की गयी।
22. अररिया-गलगलिया नई लाइन परियोजना का दिनांक 14.03.2022 एवं 15.03.2022 को निरीक्षण किया गया।
23. डिगारू-होजाई रेल परियोजना एवं लमडिंग (पाथरखोला बाइपास) - हाफलाँग आमान परिवर्तन खण्ड का निरीक्षण दिनांक 19.03.2022 को किया गया।
24. मुख्य सचिव, मेघालय के साथ दिनांक 25.03.2022 को बैठक की गयी।
25. माननीय रेल राज्य मंत्र/डी और रेल बोर्ड के अधिकारियों के साथ दिनांक 04.04.2022 को बैठक आयोजित की गयी।
26. कटिहार-जोगबनी खण्ड का विंडो ट्रेलिंग एवं अलीपुरद्वार जंक्शन नियंत्रण कार्यालय का निरीक्षण दिनांक 06.04.2022 को किया गया।
27. कोलकाता उच्च न्यायालय में दिनांक 08.04.2022 को सुनवाई में उपस्थित रहा।
28. माननीय रेल राज्यमंत्री के साथ अगरतला - अखौरा नई लाइन परियोजना के निरीक्षण में दिनांक 21.04.2022 को शामिल रहा।
29. कामाख्या-न्यू बंगाईगाँव दोहरीकरण कार्य और न्यू बंगाईगाँव -न्यू जलपाईगुड़ी खण्ड का दिनांक 26.04.2022 को निरीक्षण किया।
30. एनएफआरईयू के द्विवार्षिक सम्मेलन में शामिल हुआ।
31. सिलचर एवं अरूणाचल स्टेशन का दिनांक 11.05.2022 को निरीक्षण किया गया।
32. अरूणाचल-जिरीबाम-खोंगसांग खण्ड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण, नोनी पुल का सड़क के माध्यम से निरीक्षण एवं इंफाल स्टेशन भवन का दिनांक 11.05.2022 को निरीक्षण किया गया।
33. मणिपुर के माननीय मुख्य मंत्री एवं राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ दिनांक 12.05.2022 को बैठक की गयी।

राजभाषा संबंधी उपलब्धियाँ

1. माननीय रेल राज्यमंत्री के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण की मुख्य चालू परियोजनाओं के पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण के 94 (चौरानवे) पृष्ठों का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद कर पीपीटी तैयार किया गया।
2. गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग में 4 जनवरी, 2022 से प्रारंभ होनेवाले हिंदी प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत पाठ्यक्रम सत्र में प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु नामांकन के लिए इस कार्यालय के सभी विभागों से कुल 63 (तिरेसठ) कर्मचारियों से फार्म भरवाए गए तथा प्रशिक्षणार्थियों को कक्षा में भेजने के लिए सभी नियंत्रण अधिकारियों को सूचित किया गया।
3. माननीय रेल राज्य मंत्री द्वारा गुवाहाटी में चालू रेल परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा हेतु 115 (एक सौ पंद्रह) पृष्ठों का हिंदी अनुवाद एवं टंकण किया गया तथा पावर प्वाइंट प्रतिवेदन तैयार कर यथासंभव सर्वसंबंधितों को सौंपा गया।
4. पाँच दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 03.01.2022 से 07.01.2022 तक किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों से 41 (इकतालिस) अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।
5. जागीरोड स्टेशन (बड़ी लाइन) के 20 (बीस) पृष्ठों का एचटी-27 (ए) तथा धरमतुल स्टेशन (बड़ी लाइन) के 20 (बीस) पृष्ठों का एचटी-28 का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद, टंकण एवं पुनरीक्षण किया गया।

6. गणतंत्र दिवस के अवसर पर महाप्रबंधक (निर्माण) के भाषण का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया गया।
7. हिंदी पुस्तकालय के लिए हिंदी पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की खरीद हेतु कुल रू.18750/- (कुल अठारह हजार पाँच सौ रूपए) मात्र की स्वीकृति प्राप्त की गयी।
8. भाषा प्रशिक्षण से संबंधित विभिन्न विभागों के कर्मचारियों द्वारा नकद पुरस्कार प्रदान करने हेतु फॉर्म भरवाया गया।
9. क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 09.03.2022 को आयोजित की गयी। इस बैठक में 20 नवम्बर,2021 को आयोजित संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों का अनुपालन किए जाने पर चर्चा की गयी तथा इस बैठक में अपने कार्यालय में हो रहे कार्य में अधिक से अधिक हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सुझाव दिए गए।
10. निर्माण संगठन में 5 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्याशाला दिनांक 21.03.2022 से 25.03.2022 तक आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में विभिन्न विभागों के 11 (ग्यारह) अधिकारियों एवं 18 (अठारह) कर्मचारियों ने भाग लिया।
11. रेल संरक्षा आयुक्त के निरीक्षण के दौरान पुलों के निर्माण से संबंधित प्रमाण पत्र, चेक नोट, विवरण, टिप्पणी आदि के 60 (साठ) प्रारूपों का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद किया गया।
12. उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/निविदा का दिनांक 19.04.2022 को तथा उप मुख्य इंजीनियर/ निर्माण/सर्वे का दिनांक 21.04.2022 को राजभाषा अधिकारी/निर्माण द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया।
13. उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/योजना-1, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/अभिकल्प तथा उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/सामान्य-2 में कर्मचारियों को हिंदी माध्यम से कार्य करने के लिए टेबुल ट्रेनिंग दिया गया।
14. जनवरी-मई,2022 सत्र की भाषा प्रशिक्षण में प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत परीक्षा संबंधी पत्र सर्व संबंधितों को परिपत्रित किया गया तथा 63 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को परीक्षा में शामिल होने के लिए प्रवेश पत्र वितरित किया गया।
15. जागीरोड स्टेशन (बड़ी लाइन) परिशिष्ट (ख) के स्टेशन संचालन नियम के 164 पृष्ठों में से 40 पृष्ठों का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद, टंकण एवं पुनरीक्षण किया गया।
16. राजभाषा अधिकारी/निर्माण द्वारा दिनांक 24.05.2022 को कार्मिक विभाग में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया तथा सेवा पुस्तिका में लिखे जाने वाले नेमी किस्म के टिप्पणियों को हिंदी में लिखने संबंधी दिशानिर्देश के साथ- साथ संबंधित विभाग को टेम्पलेट प्रदान किया गया।

****

-- असम धरा सरस हरियाली --

असम धरा सरस हरियाली, बरखन बहुरंग निखारी।
तरसत उत्तर पश्चिम दक्षिण, अद्भुत हरित निहारी।।
दूर के ढ़ोल सुहावन लागे, दग्ध हृदय नर - नारी।
रिमझिम बूंदा-बुंदी छीटन, बरस वज्र - हुंकारी।।
बाग-तड़ाग, रैन-रजाई, मंजरी, कली, क्षत - सारी।
लोग बाग भर में, क्या श्रावण,माघ,फागुन चैत न्यारी।।
छंटा - वसंत - हत, क्षुब्ध भ्रमर, आस रही भरमारी।
मिलजुल कर जी रहे नर-नारी, कृपा करो हे! गिरधारी।।
कोयल-कूक, स्वर गूंजे बगिया, पहर-गगन, धनकारी।।
ऋतु मिश्रण, कर्ता-विधि रचना, हर्षित कुंज बिहारी।।
ओ बसंत! ऋतुओं का राजा, धरा विशेष में की जारी।
लोग कोट-सूट, बरसाती पिन्हें, झांकी, बरखन प्यारी।।
असम धरा विशेष परब, वाह रे बिहू नृत्य अति प्यारी।
डोलन लागे लोग ढ़ोल पर, थिरकत हैं सब नर-नारी।।
बहाग कहो या रंगोली, कहो काति या कंगाली।
माघ कहो या भोगाली, मेजी की रीति पुरानी।।
बाहुबली बहता ब्रह्मपुत्र, कामाख्या माई अति प्यारी।
असम का गैंडा प्रतीक है ऐसा, सब पर परत भारी।।
चाय बागान हो या धान खेत खलीहान की क्यारी।
प्रकृति न्यारी इतनी प्यारी सब ओर देखो हरियारी।।

------- राजेश रंजन कुमार,
राजभाषा अधिकारी
पू.सी.रेल (निर्माण)

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की बैठक

दिनांक : 09.03.2022 (बुधवार)

श्री सुनील शर्मा, महाप्रबंधक(निर्माण) की अध्यक्षता में अक्टूबर-दिसम्बर, 2021 को समाप्त तिमाही की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की बैठक 09 मार्च, 2022 को आयोजित की गयी। महाप्रबंधक(निर्माण) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि इस नियमित बैठकों में विस्तृत समीक्षा के द्वारा ही अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने के प्रति रूचि जागृत की जा सकती है। समिति के प्रत्येक सदस्य अपने कार्यक्षेत्र में राजभाषा के कार्यान्वयन पर विशेष निगरानी रखें और पाई गई कमियों को दूर करके राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में वृद्धि सुनिश्चित करें। 20 नवम्बर, 2021 को संसदीय राजभाषा समिति के दौरे के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन और हिंदी भाषा प्रशिक्षण पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित अधिकतर लक्ष्य को हमने प्राप्त कर लिया है परंतु इसमें और अधिक प्रगति के लिए निरंतर प्रयास करना होगा। इसके लिए सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने-अपने कार्यक्षेत्र का आकलन करें और जहाँ तक संभव हो, हिंदी में कार्य करने को बढावा दें। इसके पूर्व बैठक का शुभारंभ करते हुए श्री एस.पी.सिंह, मुख्य इंजीनियर/नि.-8 सह मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि. ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि चापरमुख (बड़ी लाइन) के स्टेशन संचालन नियम के परिशिष्ट "क" के कुल 18 पृष्ठों, दुधनोई स्टेशन(बड़ी लाइन), बिलासीपारा, अभयापुरी और गोवालपाड़ा टाउन के फाटक संचालन अनुदेश के कुल 80 पृष्ठों का हिंदी अनुवाद, टंकण सहित विधीक्षा पूरी कर ली गई है। साथ ही, जुलाई-नवम्बर,2021 सत्र में हिंदी भाषा प्रशिक्षण में 31 कर्मचारी उत्तीर्ण हुए हैं तथा जनवरी, 2022 सत्र में 63 कर्मचारियों को हिंदी भाषा प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया है। श्री अजय कुमार, उप मुख्य इंजीनियर/नि./अभिकल्प-1 ने सुझाव दिया कि तकनीकी शब्दावली को निर्माण संगठन के वेबसाइट में अपलोड किया जाए ताकि आवश्यकतानुसार इसे कोई भी डाउनलोड कर सके। इस बैठक का पावर प्वाइंट प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण एव संचालन श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री दीपक कुमार गुप्ता, उप मुख्य बिजली इंजीनियर/ निर्माण/विद्युतीकरण सह उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने किया।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की संयुक्त बैठक

दिनांक 07.06.2022 (मंगलवार)

श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक(निर्माण) की अध्यक्षता में जनवरी-मार्च, 2022 को समाप्त तिमाही की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की बैठक ओपन लाइन के साथ संयुक्त रूप से **07 जून, 2022** को पूर्वोत्तर सीमा रेल, मुख्यालय के सभाकक्ष में आयोजित की गई।

श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक(निर्माण) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में निम्नलिखित बातों पर विशेष जोर दिया -

1. समिति की बैठकों में राजभाषा अधिकारी सहित नोडल अधिकारियों (राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु नामित) को भी शामिल किया जाए ताकि बैठक में विस्तृत समीक्षा के द्वारा विभागों में राजभाषा के कार्यान्वयन का सही आकलन किया जा सके।
2. सभी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति जागरूकता और सम्मान के द्वारा ही हम रेल के कार्यक्षेत्र में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण कर पाएंगे और सभी के सामूहिक प्रयास से ही इसमें प्रगति लाई जा सकती है।
3. राजभाषा के प्रचार-प्रसार को सिर्फ मुख्यालय तक ही नहीं बल्कि मंडलों और फील्ड यूनिटों में भी विस्तारित करें।
4. रेल स्टेशनों में यात्री सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए वहाँ कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाए ताकि इसका लाभ जन-साधारण तक मिल सके।
5. मुख्य स्टेशनों पर हिंदी पुस्तकालय/वाचनालय खोले जाएँ।
6. जिन स्टेशनों पर पुस्तकालय पहले से ही मौजूद हैं उन्हें पुन: बेहतर तरीके से चालू किया जाए।
7. पुस्तकालय के खुलने और बंद होने का समय सहित पुस्तकालयाध्यक्ष का संपर्क विवरण भी प्रदर्शित किया जाए।
8. राजभाषा के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने के लिए समय-समय पर हिंदी प्रतियोगिताएँ और अन्य रोचक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
9. सभी कार्यालय परिसर एवं रेल स्टेशनों सहित अन्य स्थानों पर हिंदी में लिखे गए अशुद्धियों को अभियान चलाकर दूर किया जाए और उन्हें शुद्ध लिखवाए जाएँ।
10. स्टेशन परिसरों में महापुरूषों के अनमोल वचन और राजभाषा से संबंधित स्लोगन आदि लगवाने के कार्य शीघ्र पूरा किया जाए।
11. सभी उच्चाधिकारी ई-फाइलों में छोटे-छोटे टिप्पणी हिंदी में लिखें एवं अपने अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने को प्रेरित करें।

12. वार्षिक कार्यक्रमों में निर्धारित मानदंडों के अनुरूप अभी तक जिन मदों में लक्ष्य से पीछे हैं उन पर विशेष निगरानी रखी जाए और उसको दूर करने के लिए सार्थक प्रयास किए जाएँ।

13. सभी विभागों में राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

इस बैठक का शुभारंभ श्री राजेश कुमार, मुख्य इंजीनियर/नि.- 9 सह मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि. के स्वागत संबोधन के साथ हुआ। श्री कुमार ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि निर्माण संगठन में 3 से 7 जनवरी, 2022 एवं 21 से 25 मार्च, 2022 को 5 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विभागों के 13 अधिकारी एवं 57 कर्मचारी शामिल हुए। इन हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से हिंदी व्याकरण, कार्यालयीन पत्र लेखन, मसौदा तैयार करने, प्रशासनिक शब्द, ई-ऑफिस, एचआरएमएस और ई-पास की प्रक्रिया जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया। श्री कुमार ने कहा कि निर्माण संगठन में राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लगभग सभी मदों में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है।

श्री हरि शंकर यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 ने सुझाव दिया कि सभी अधिकारियों के रेल आवास / बंगलो के मुख्यद्वार के नेमप्लेट हिंदी में लिखवाए जाएँ।

इस बैठक का संपूर्ण संचालन श्री प्रताप सिंह बगड़वाल, उप महाप्रबंधक(राजभाषा), पूर्वोत्तर सीमा रेल ने किया। श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण द्वारा जनवरी-मार्च, 2022 को समाप्त तिमाही के लिए निर्माण संगठन में राजभाषा के कार्यान्वयन पर पावर प्वाइंट प्रतिवेदन के माध्यम से रिपोर्ट प्रस्तुत किया गया, जिस पर विस्तृत रूप से विचार-विमर्श किया गया।

अंत में श्री दीपक कुमार गुप्ता, उप मुख्य बिजली इंजीनियर/नि. सह उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि. ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

एक से सौ तक संख्यावाचक हिंदी तथा संस्कृत शब्दों का मानक रूप

एक	एक:	छब्बीस	षड्विंशति:	इक्यावन	एतपञ्चाशत्	छिहत्तर	षट्सप्तति:
दो	द्वौ	सत्ताइस	सप्तविंशति:	बावन	द्विपञ्चाशत्	सतहत्तर	सप्तसप्तति:
तीन	त्रय:	अट्ठाइस	अष्टाविंशति:	तिरपन	त्रिपञ्चाशत्	अठहत्तर	अष्टसप्तति
चार	चत्वार:	उनतीस	नवविंशति:	चौवन	चतु:पञ्चाशत्	उनासी	एकोनाशीति:
पाँच	पञ्च	तीस	त्रिंशत्	पचपन	पञ्चपञ्चाशत्	अस्सी	अशीति:
छह	षट्	इकतीस	एकत्रिंशत्	छप्पन	षट्पञ्चाशत्	इक्यासी	एकाशीति:
सात	सप्त	बत्तीस	द्वात्रिंशत्	सतावन	सप्तपञ्चाशत्	बयासी	द्वशीति:
आठ	अष्ट	तैंतीस	त्रयत्रिंशत्	अठावन	अष्टपञ्चाशत्	तिरासी	त्र्यशीति:
नौ	नव	चौंतीस	चतुस्त्रिंशत्	उनसठ	एकोनषष्ठि:	चौरासी	चतुरशीति:
दस	दश	पैंतीस	पंचत्रिंशत्	साठ	षष्ठि::	पचासी	पञ्चाशीति:
ग्यारह	एकादश	छत्तीस	षट्त्रिंशत्	इकसठ	एकषष्ठि:	छियासी	षडशीति:
बारह	द्वादश	सैंतीस	सप्तत्रिंशत्	बासठ	द्विषष्ठि:	सतासी	सप्ताशीति:
तेरह	त्रयोदश	अड़तीस	अष्टात्रिंशत्	तिरेसठ	त्रिषष्ठि:	अठासी	अष्टाशीति:
चौदह	चतुर्दश	उनतालीस	एकोनचत्वारिंशत्	चौंसठ	चतु:षष्ठि:	नवासी	एकोननवति:
पंद्रह	पञ्चदश	चालीस	चत्वारिंशत्	पैंसठ	पञ्चषष्ठि:	नब्बे	नवति:
सोलह	षोडश	इकतालीस	एकचत्वारिंशत्	छियासठ	षट्षष्ठि:	इक्यानवे	एकनवति:
सत्रह	सप्तदश	बयालीस	द्विचत्वारिंशत्	सड़सठ	सप्तषष्ठि:	बानवे	द्विनवति:
अठारह	अष्टादश	तैंतालीस	त्रिचत्वारिंशत्	अड़सठ	अष्टषष्ठि:	तिरानवे	त्रिनवति:
उन्नीस	नवदश	चवालीस	चतुश्चत्वारिंशत्	उनहत्तर	एकोनसप्तति:	चौरानवे	चतुर्नवति:
बीस	विंशति:	पैंतालीस	पञ्चचत्वारिंशत्	सत्तर	सप्तति:	पचानवे	पञ्चनवति:
इक्कीस	एकविंशति:	छियालीस	षट्चत्वारिंशत्	इकहत्तर	एकसप्तति:	छियानवे	षण्णवति:
बाइस	द्वाविंशति:	सैंतालीस	सप्तचत्वारिंशत्	बहत्तर	द्विसप्तति:	सतानवे	सप्तनवति:
तेइस	त्रयोविंशति:	अड़तालीस	अष्टचत्वारिंशत्	तिहत्तर	त्रिसप्तति:	अठानवे	अष्टनवति:
चौबीस	चतुर्विंशति:	उनचास	एकोनपञ्चाशत्	चौहत्तर	चतु:सप्तति:	निन्यानवे	नवनवति:
पच्चीस	पञ्चविंशति:	पचास	पञ्चाशत्	पचहत्तर	पञ्चसप्तति:	सौ	शतम्

हिन्दी कार्यशालाएँ

महाप्रबंधक (निर्माण) कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 03.01.2022 से 07.01.2022 तक 05 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में निर्माण संगठन के विभिन्न विभागों के कुल 06 (छह) अधिकारी एवं 35 (पैंतीस) कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए गृह मंत्रालय के श्री कोमल कुमार सिंह, उप निदेशक / हिंदी प्रशिक्षण, श्री राधेश्याम बैरवा, सहायक निदेशक (भाषा), श्री निपन बरदोलई, हिंदी प्राध्यापक, ओपन लाइन के श्री प्रताप सिंह बगरवाल, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं निर्माण संगठन के श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी / निर्माण ने व्याख्यान दिया।

महाप्रबंधक (निर्माण) कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 21.03.2022 से 25.03.2022 तक कुल 05 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में से दिनांक 24.03.2022 को अधिकारियों के लिए विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया था। निर्माण संगठन के विभिन्न विभागों के कुल 11 (ग्यारह) अधिकारी एवं 18 (अठारह) कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए गृह मंत्रालय के श्री कोमल कुमार सिंह, उप निदेशक / हिंदी प्रशिक्षण, श्रीमती शर्मिला ताई, हिंदी प्राध्यापिका, ओपन लाइन के श्री प्रताप सिंह बगरवाल, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री सहदेव सिंह पुरती, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी एवं निर्माण संगठन के श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी / निर्माण ने व्याख्यान दिया।

हिन्दी कार्यशाला
पूर्वोत्तर सीमा रेल
(निर्माण संगठन)
दिनांक : 01.06.22 से 07.06.22
REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA

हिंदी एक अत्यंत शक्तिशाली भाषा है।
हिन्दी कार्यशाला
पूर्वोत्तर सीमा रेल
(निर्माण संगठन)
REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2022/6/2 16:08

हिन्दी कार्यशाला
पूर्वोत्तर सीमा रेल

महाप्रबंधक (निर्माण) कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 01.06.2022 से 03.06.2022 तक तथा दिनांक 06.06.2022 एवं 07.06.2022 को कुल 05 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में से दिनांक 06.06.2022 को विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें ओपन लाइन के श्रीमती प्रतीभा सिन्हा, सहायक कार्मिक अधिकारी, पू.सी.रेल ने हिंदी माध्यम से हिंदी व्याकरण, कार्यालयीन पत्र लेखन, मसौदा तैयार करने, प्रशासनिक शब्द, एचआरएमएस के तहत ई-एपीएआर विषय पर व्याख्यान दिया, जिससे विभिन्न विभागों के उपस्थित सभी कर्मचारीगण विशेष रूप से लाभान्वित हुए क्योंकि एपीएआर तो सभी को लिखना पड़ता है तथा रखरखाव भी करना पड़ता है। निर्माण संगठन के विभिन्न विभागों के कुल 45 (पैंतालीस) कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए गृह मंत्रालय के श्री कोमल कुमार सिंह, उप निदेशक / हिंदी प्रशिक्षण, श्रीमती शर्मिला ताई, हिंदी प्राध्यापिका, श्री निपन बरदोलई, हिंदी प्राध्यापक, ओपन लाइन के श्रीमती प्रतीभा सिन्हा एवं निर्माण संगठन के श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी / निर्माण ने व्याख्यान दिया।

दीमापुर-कोहिमा सेक्शन पर संक्षिप्त टिप्पणी

--- श्री मानस रंजन महापात्रा, सीनि.से.इंजी./निर्माण

यह परियोजना नागालैण्ड में पूर्वोत्तर सीमा रेल के अंतर्गत आता है। धनसिरी से जुब्जा के बीच की यह नई लाइन एक महत्वपूर्ण रेल संपर्क के रूप में नागालैण्ड के लिए माल और यात्री यातायात के भविष्य की मांग को पूरा करेगा। सम्प्रति, इस इलाके में संचार का एकमात्र माध्यम राष्ट्रीय राजमार्ग - 39 है, जो कोहिमा और दीमापुर को आपस में जोड़ता है। नागालैण्ड को देश के अन्य भागों से जोड़ने वाला क्रियाशील रेल शीर्ष दीमापुर में है।

प्रस्तावित धनसिरी-जुब्जा नई बड़ी लाइन 90.50 कि.मी. की धनसिरी (डिमापुर)-जुब्जा (कोहिमा) नई बड़ी लाइन परियोजना का हिस्सा है। यह प्रस्तावित परियोजना तीन चरणों में क्रियान्वित की जाएगी।

1. प्रथम चरण - 16 कि.मी. का धनसिरी-सुखोवी सेक्शन का निर्माण
2. द्वितीय चरण - 30 कि.मी. का सुखोवी-खाइबॉग सेक्शन का निर्माण
3. अंतिम चरण - 45 कि.मी. का खाइबॉग-जुब्जा सेक्शन का निर्माण

कार्बी आंगलॉग जिले के धनसिरी स्टेशन में मौजूदा रेल लाइन की नई बड़ी लाइन में उत्थान होगी तो दीमापुर से 19 कि.मी. की कम दूरी पर जुब्जा पहुंचेगी जो कोहिमा से 16 कि.मी. की कम दूरी पर है। इस रेल लाइन के निर्माण से राजधानी कोहिमा शहर भारत की बड़ी लाइन के नक्शे में शामिल हो जाएगी।

देश में थोक एवं लम्बी दूरी के माल भाड़ा का मुख्य वाहक रेल है। मौजूदा नेटवर्क की सीमित क्षमता माल भाड़ा और यात्री यातायात अर्थात् दोनों क्षेत्र के विकास की वांछित स्तर हासिल करने में गंभीर रूप से बाधक रहा है। मौजूदा नेटवर्क की सीमित क्षमता को दूर करने के लिए और माल भाड़ा तथा यात्री यातायात में बढोत्तरी पर लगाम लगाने के लिए नई लाइन का प्रमुख महत्व है। 100 कि.मी. प्रति घंटे की संभावित गति के साथ नई बड़ी लाइन की कोटि ई-मार्ग के रूप में वर्गीकृत है।

परियोजना एलाइन्मेंट उबड़-खाबड़, पहाड़ी और खड़ी ढलान वाली तराई के माध्यम से पार करता है। संपूर्ण परियोजना एलाइन्मेंट में कुल 19 सुरंग और कई बड़े पुल तथा कई छोटे पुल हैं। इस सेक्शन की सबसे लम्बी सुरंग सुरंग-7 है जिसकी लंबाई 6.6 कि.मी. है तथा सबसे लम्बा पुल 700 मीटर का है।

प्रस्तावित सुरंग एलाइन्मेंट का दृश्य (स्त्रोत गुगल अर्थ)

नव वर्ष

--- श्री प्रशांत कुमार, सीनि.से.इंजी./नि./अभिकल्प

नभ को छूने की शक्ति,
नए साल तुझमें भी आए,
सुख, समृद्धि और शान्ति,
नए साल में तु पाए।

भय, बाधा व रोग-शोक,
दूर सभी तुझसे जाए,
मानवता हो मूल मंत्र,
भाईचारा सबको भाए।

कर्मयोग और अनुशासन,
रौनक जीवन में बढ़ाए,
लता-प्रेम की फले-फूले,
खुशी कभी ना बंट पाए।

हो मुराद मन की पूरी,
इन्द्रधनुष मन-धन में छाए,
मिले शिखर सफलता का,
जन-जन तेरी जय गाए।

****

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

--- सुभाष चंद्र बोस

तवांग की सैर : यात्रा वृतांत

--- आमिर परवेज, सीनियर सेक्शन इंजीनियर/निर्माण/योजना-2

1. 2021, अप्रैल 14 ,पहला दिन (गुवाहटी से बोमडिला)

गुवाहाटी से सुबह 6.45 बजे मैं और पिता जी तेजपुर होते हुए अरुणाचल की तरफ बढ़ रहे हैं। अरुणाचल यानि 'उगते हुए सूर्य का प्रदेश'। अरुणाचल प्रदेश में सूर्य बहुत जल्दी दर्शन देते हैं साथ ही अस्त भी जल्दी हो जाते हैं। हमने एक कार रेंट पर लिया था क्योंकि अरुणाचल के उत्तरी छोर जाने के लिए फ़िलहाल कोई और सुगम साधन उपलब्ध नही है। गुवाहाटी का तापमान करीब 21 डिग्री के आस-पास था। यात्रा के दौरान रास्ते भर घरों के बाहर सुपारी के पेड़ों की प्रचुरता दिखाई दे रही है। हमने प्रातः 10 बजे तेजपुर पार किया। तेजपुर में हमने कुछ जलपान किया। आगे बढ़ते हुए हम नामेरी फॉरेस्ट से गुजर रहे हैं,पेड़ों की प्रचुरता मंत्रमुग्ध करने वाली है। सड़क के दोनों ओर बस घने पेड़, ताज़ी हवा, आँखों को सुकून देते ये पल एक यादगार सफर के गवाह हैं। थोड़ा आगे बढने पर हमे भालुकपोंग का प्रवेश द्वार मिला। अरुणाचल में प्रवेश के लिए आई एल पी (इनर लाइन परमिट) की आवश्यकता होती है, जो हमने एक एजेंट के द्वारा ऑनलाइन बनवा लिया था । द्वार प्रहरी ने हमारे परमिट की जाँच की। भालुकपोंग में प्रवेश के साथ ही अरुणाचल प्रदेश शुरू हो जाता है। साथ ही, मोबाईल का नेटवर्क भी जा चुका है। रास्ते भर छोटे बड़े झरने और नदियों ने मन को जैसे बांध लिया है। सड़क के किनारे छोटी-छोटी दुकाने हैं। सर्पिलाकार सड़कों से गुजरते हुए गाड़ी सावधानी से धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। भूस्खलन की वजह से भारी मात्रा में पहाड़ियों से छोटे बड़े पत्थर निकले हुए हैं। यहाँ बांस के पेड़ों की प्रचुरता है। जैसे-जैसे ऊँचाई पर बढ़ते जा रहे हैं, चीड़ के खूबसूरत पेड़ नजर आने लगते हैं, सीधे मुस्कुराते हुए आत्मविश्वास से लबरेज़ चीड़

मानों आकाश को निमंत्रण दे रहे हैं। लगता है, आकाश के उस पार की दुनिया से इनका गहरा संबंध है। ये खूबसूरत पेड़ बारिश को बुलाते हैं और खिलखिलाती नदियां और भी हसीन हो उठती हैं। पहाड़ों पर प्रकृति ने अपने सारे रंग उड़ेल दिए हैं ।

बोमडिला पहुँचने से 1 घंटा पहले थोड़े ओले (बर्फ की बारिश) पड़ने लगे, जिससे थोड़ी ठण्ड बढ़ गयी, हमलोग बोमडिला शाम में 3 बजे पहुँचे। ठंडक का अहसास यहाँ चरम सीमा पर है। बोमडिला का तापमान करीब 6 डिग्री के आस-पास थी, हड्डियों को कँपा देने वाला ठंड है। हमने एक होम-स्टे बुक किया था। वहां पहुँचते ही गरमा-गरम अदरख वाली चाय से हमारा स्वागत किया गया। वहाँ पास ही एक बौद्ध मठ है। अंदर जाने पर ठहरी हुई शांति का आभास हुआ। मठ के पास ही गुरुकुल जैसा स्थान है जहाँ शाम के समय बौद्ध वेशभूषा में कुछ बच्चे खेलते हुए दिखाई दिए। बोमडिला एक छोटा सा शहर है, यहाँ पहुंचकर शहरी संस्कृति का आभास हुआ। लड़के-लड़कियां खूबसूरत आधुनिक परिधानों में दिखाई दे रहे हैं। रात को होम-स्टे की बालकनी से चाँद की प्राकृतिक रोशनी में शहर बहुत खूबसूरत नज़र आ रहा है। होम-स्टे में रात का खाना बहुत ही स्वादिष्ट लगा। मूंग की दाल, भिन्डी की भुजिया और घी लगी रोटी, सादा और स्वादिष्ट, बिलकुल घर जैसा खाना।

2. 2021, अप्रैल 15, दूसरा दिन (बोमडिला से तवांग)

अगले दिन सुबह 6 बजे हम बोमडिला से तवांग जाने के लिए रवाना हो रहे हैं। बोमडिला से तवांग की यात्रा लगभग 8 घंटे है। लंबे सफर के लिए जरुरत का खाने पीने का सामान लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। रास्ते में खूबसूरत दृश्यों ने मन को बाँध लिया। उत्तर-पूर्व भारत प्राकृतिक सुंदरता से भरा हुआ है। सेला पास पर ही एक

खूबसूरत झील थी, जो ठण्ड में आधी से ज्यादा जम चुकी थी। यहाँ आसपास की पहाड़ियों पर नीचे तक हल्की बर्फ़ छाई हुई है।

सेला दर्रा बहुत ही ऊंचाई वाला एक पर्वतीय दर्रा है, जो तवांग का प्रवेश द्वार है। पर्वत श्रृंखला की सफेद चोटियों के परिप्रेक्ष में सुंदर सेला दर्रा द्वार, राजसी अंदाज में शान से खड़ा दिखता है, जिसे लाल, नीले, हरे और सुनहरे बौद्ध रंगों से डिज़ाइन किया गया है। यह अरुणाचल के तवांग और पश्चिमी कामेंग जिले को जोड़ने का एकमात्र और अत्यधिक ही महत्वपूर्ण मार्ग है। यह दर्रा समुद्र तल से 13,700 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और तवांग शहर के केंद्र से लगभग 67 कि.मी. की दूरी पर है। दर्रे के ऊबड़-खाबड़ और बीहड़ इलाके में शायद ही कोई वनस्पति देखने को मिलती है। अपनी ऊंचाई के कारण इस झील में साल के ज्यादातर समय बर्फ जमी रहती है। पर यह भव्य हिमालय का अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती है। जैसे ही हम सेला पास में गाड़ी से उतरे एक बर्फीली हवा ने हमे कंपकपा दिया। हम समतल मैदान में रहने वाले लोगों के लिए ये शरीर में करेंट दौड़ने जैसा था। हमने इतनी ठण्ड की आशा नहीं की थी। हमने थोड़े गरम कपड़े रखे थे, परन्तु वो भी कम पड़ रहे थे। सेला पास में प्रवेश द्वार के पास एक नाश्ते की छोटी सी दुकान है। कंपकंपाती ठण्ड में गरमा-गरम मैगी और कॉफ़ी ने हमे थोड़ी राहत दी। आगे बढने पर रास्ते में जसवंत गढ़ मेमोरियल आया है। जसवंत जी के बारे में काफी पढ़ा व सुना था, आज उस स्थान पर पहुँचकर मन श्रद्धा से नतमस्तक हो गया है।

1962 में भारत-चीन के युद्ध के समय सैनिक जसवंत ने जिस बहादुरी के साथ 72 घंटों तक अकेले चीनी सेना का मुकाबला किया, वह रोंगटे खड़े करने वाला है। यह हमारे बहादुर सैनिकों का ही योगदान है कि कोई भी पड़ोसी देश भारत की ओर आँख उठाकर देखने से पहले कई बार सोचते हैं। जसवंत गढ़ स्मारक के सामने एक आर्मी कैंटीन है, जहाँ बहुत ही कम दर पर जलपान उपलब्ध है। हमने भी सैनिको के हाथ के बने हुए स्वादिष्ट डोसा और चाय का लुफ्त उठाया। आगे बढ़ने पर रास्ते में जल-प्रपात के लिए रुके हैं। यह लगभग 100 मीटर की ऊंचाई से गिरकर तवांग नदी में मिल जाता है। बोमडिला और तवांग को जोड़ने वाली सड़क से यहाँ आसानी से पहुंचा जा सकता है। इसकी खूबसूरती को शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है। इतनी ऊंचाई से गिरते दूधिया झरने को देखकर एक पल के लिए ख़ुशी से चीख निकल पड़ी। झरने पर गिरती सूर्य की किरणें न जाने एकसाथ कितने इंद्रधनुष बना रही हैं। उस पल को सिर्फ़ अनुभव किया जा सकता है, मुझे समझ नहीं आया कि किस तरह मैं इस खूबसूरत क्षण को हमेशा के लिए सहेज कर रखूं। मैं जानता हूँ कि इस वक़्त मोबाईल को बीच में लाना एक तरह का दख़ल होग। लेकिन, उंगलियाँ स्वतः मोबाईल की ओर बढ़ रही है। एक वीडियो के रूप में इस विशालकाय झरने को समेटने का प्रयास किया है। दोपहर 2 बजे तवांग पहुँचना हुआ। हमने होटल पहले से बुक किया हुआ था। चेक इन किया। चूँकि, हम थके हुए थे, अतः विश्राम करने का निर्णय लिया।

3. 2021, अप्रैल 16, तीसरा दिन

अरुणाचल प्रदेश का विचित्र शहर तवांग, एक प्राचीन और अछूता पर्यटन स्थल है, जो प्रकृति के अद्भुत रंगों की विषमताओं के मध्य स्थित है। जहां पत्तों की हरियाली वाले घने जंगल से उभरती दृढ़ बर्फीली चोटियां और उनके

बीच से गुजरती बर्फीली दर्राएं हैं। पूर्व में बर्फ की चादर ओढे पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा, अनेक सुरम्य बौद्ध मठों का शहर तवांग, आपको एक साहसी पर रोमांचकारी यात्रा का अनुभव कराता है। यहां पर पहुंचने के लिये आपको पर्वतों को लांघते हुए कई टेढ़े-मेढ़े पहाड़ी रास्तों और घुमावदार दर्राओं से गुजरना पड़ता है। बौद्ध उपासना और गोंपा के रंगीन फहरते ध्वजों का दृश्य, इस पूरे परिदृश्य को जीवंत कर देते हैं। पर्यटकों को, यहां के मूल निवासियों की गर्मजोशी के साथ-साथ यहां की अनोखी संस्कृति भी देखने को मिलती है।

यहाँ की सुंदर झीलें और शांत झरने अपनी नैसर्गिक सौंदर्य की छटा बिखेरती हैं, जबकि यहां के भीड़-भाड़ वाले बाजार और साहसिक खेल, पर्यटकों को रोमांच और खुशियों से सराबोर कर देते हैं। यहाँ आप जी भर के जनजातीय समुदायों द्वारा बनाई हस्तशिल्प की अनोखी वस्तुएं खरीद सकते हैं। इन वस्तुओं को बनाने में यहाँ की सदियों पुरानी दस्तकारी और कौशल का इस्तेमाल किया जाता है। तवांग घाटी मोनपा की भूमि के नाम से लोकप्रिय है, जो अरुणाचल प्रदेश की एक प्रमुख जनजाति समूह है। उनके पास कला, शिल्प और हथकरघा की अद्भुत विरासत है। घरों में सुंदर नक्काशीदार लकड़ी से बने फर्नीचर और घरों की आंतरिक सजावट, उनके पारंपरिक और सांस्कृतिक लोक आचारों को दर्शाती है, जो इनके बस्ती में ठहरने को और भी मनोरम बना देती है। इसके अलावा तवांग, धुंध से आच्छादित पर्वतीय परिदृश्य, भव्य पैदल मार्गों और घाटी के मनमोहक दृश्यों के चलते, पर्यटकों के लिये एक अत्यंत ही आकर्षक गंतव्य बन जाता है।

तवांग मठ

तवांग में एक रात रूककर हम अगले दिन तवांग बौद्ध मठ के दर्शन की ओर जा रहे हैं। मठ विशालकाय और बहुत खूबसूरत है। लगभग 400 वर्ष पुराना मठ छठे दलाई लामा का जन्म स्थान है। यह मठ तिब्बत की

राजधानी ल्हासा के बाद एशिया का सबसे बड़ा मठ है। अंदर महात्मा बुद्ध की 8 फीट ऊँची स्वर्ण प्रतिमा दर्शकों को विस्मय में डालने के लिए काफी है। बौद्ध मठ में लाल पीले, नीले, हरे और सफ़ेद रंगों की अधिकता है, जो देखने में काफ़ी आकर्षक लगता है। मठ में ही एक संग्रहालय है जहाँ बौद्ध धर्म से सम्बंधित वस्तुएं रखी हैं। यहाँ गैलरी में विभिन्न नेताओं व महत्वपूर्ण लोगों की तस्वीरें लगी हैं, जो तवांग बौद्ध मठ में आये थे ।

तवांग मठ, पूरी घाटी का सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक केंद्र है। समुद्र तल से लगभग 10,000 फीट की ऊंची एक पहाड़ी के शिखर पर स्थित, यह मठ भारत का सबसे बड़ा मठ है। इसके दक्षिण और पश्चिम में गहरी खाइयाँ हैं, उत्तर में एक संकीर्ण रिज और पूर्व की ओर हल्की सी नियमित ढलान है। सर्दियों में, जब यह बर्फबारी से ढंक जाता है, तो इसकी सुंदरता और भी बढ़ जाती है। इस राजसी मठ में, उत्तर की ओर से काकालिंग गेट के रास्ते प्रवेश किया जा सकता है, जो एक झोपड़ीनुमा संरचना है, पर इसकी दीवारें पत्थरों से बनी हैं। काकालिंग की छत या अंदरुनी छत पर मंडल या 'काईंग-खोर' चित्रित हैं, जबकि अंदर की दीवारों पर संतों और देवताओं के अनेक चित्र अंकित हैं। काकालिंग के बाद, मठ का मुख्य द्वार आता है, जो इसकी उत्तरी दिशा में है। इसकी पूर्वी दीवार लगभग 925 फीट लंबा है। इस मठ का एक और प्रमुख आकर्षण है, भगवान बुद्ध की सोने की 25 फुट ऊंची प्रतिमा, जिसमें भगवान बुद्ध एक कमल रूपी सिंहासन पर बैठे हैं और उनके अगल-बगल में उनके दो मुख्य सेवक मौदगल्यायन और सारिपुत्र हैं और दोनों के हाथों में एक डंडा और एक भिक्षा पात्र है। तीन मंजिला तवांग मठ 925 फीट (282 मीटर) लंबी परिसर की दीवार से घिरा है और इसमें 65 आवासीय भवन हैं। यहां एक पुस्तकालय भी है, जिसमें मुख्य रूप से कंग्युर और तेंग्युर के मूल्यवान प्राचीन हस्तलेख हैं।

<u>बुमला दर्रा</u>

लगभग 33 किलोमीटर आगे बूमला पास की ओर बढ़ रहे हैं। यहीं चाइना बॉर्डर है। दर्रा पर जाने के लिए विशेष परमिट की आवश्यकता होती है, जिसे तवांग में उपायुक्त कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

रास्ते में बहुत सी खूबसूरत झीलें हैं जो ठंड के कारण जम चुकी हैं। इन्हीं में से एक नाकुला झील पर हम रुके हैं। यह बेइंतिहा खूबसूरत झील है। एक और झील है जो सिने तारिका माधुरी दीक्षित की कोयला फिल्म पर फिल्माए गाने की वजह से लोकप्रिय हो गई है। झील का वास्तविक नाम संगेत्सर झील है, लेकिन इसे माधुरी झील के नाम से जाना जाता है। झील के बीचोंबीच लगे चीड़ के पेड़ खुशनुमा दृश्य बना रहे हैं। आगे बढ़ते हुए हम भारत-चीन सीमा पर पहुँच चुके हैं। हम लगभग 15200 फीट की ऊँचाई पर खड़े हैं। बर्फीली हवा है जिसकी रफ़्तार बहुत तेज है। सड़क के दोनों ओर छोटे-बड़े कई पहाड़ हैं। आसपास की जमींन बंजर और पथरीली है, जो एक पल को यक़ीनन किसी दूसरे ग्रह का भ्रम दिलाने के लिए काफी है। दूर बर्फ से ढंके चीनी पहाड़ दिखाई दे रहे हैं। भारत-चीन सीमा पर खड़े हैं। हमारे जैसे कई और पर्यटक हैं जो भारत-चीन सीमा के दूसरी तरफ चीनी क्षेत्र में अपने पाँव रखकर रोमांचित महसूस कर रहे हैं और विदेश यात्रा का 'फील' ले रहे हैं। सीमा क्षेत्र पर ही एक पत्थरों का ढेर लगा है जिसके एक तरफ भारत के ध्वज का निशान है और दूसरी तरफ चीनी ध्वज का निशान है। भारत चीन सीमा समझौते के अंतर्गत अभी सिर्फ लाइन ऑफ़ एक्चुअल कंट्रोल है। यही वजह है कि पड़ोसी देश चीन नें सैंकड़ों बार समझौते की अवहेलना कर भारत अधिकृत क्षेत्र को हथियाने की गुस्ताखी की। हालांकि, हमारे यहाँ जब तक जसवंत सिंह जैसे देशभक्ति से लबरेज सैनिक हैं तब तक कोई भी देश भारत का बाल भी बांका नहीं कर सकता। सच, इतनी ऊँचाई पर आकर भारत-चीन सीमा के इतने नजदीक खड़े होने पर जो भावना मन में आ रही है उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। यहाँ एक सैनिक गाइड की तरह विस्तार से

भारत-चीन सीमा के बारे में समझा रहा है। उन्हीं से बात करते हुए ज्ञात हुआ कि हमारे सैनिक ठंड की चरम सीमा को भी पार करते हुए लगभग माइनस पच्चीस डिग्री सेल्सियस तापमान में रहकर हमारी रक्षा करते हैं। भारत का ध्वज शान से हवा में लहरा रहा है। भारतीय सैनिकों को कोटिशः नमन। मुझे गर्व है, मैं भारतीय हूँ। हिमालय के इस रूप को देखकर श्री गोपाल सिंह 'नेपाली' द्वारा लिखित कुछ पंक्तियाँ याद आ रही थीं :

अरूणोदय की पहली लाली, इसको ही चूम निखर जाती ।

फिर संध्या की अंतिम लाली, इस पर ही झूम बिखर जाती ।।

इन शिखरों की माया ऐसी

जैसे प्रभात, संध्या वैसी

अमरों को फिर चिंता कैसी

इस धरती का हर लाल खुशी से उदय-अस्त अपनाता है ।

गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है ।।

3. 2021, अप्रैल 17, चौथा दिन

वापस तवांग से बोम्डिला यात्रा के दौरान रास्ते में अचानक ही मौसम बदल गया है। आँखों को यकीन नहीं हो रहा कि चटख धूप वाला मौसम अचानक से घने बादलों वाला हो जायेगा। रुई जैसे बादल घुमावदार सड़कों पर आकर ठहर गए हैं और देखते ही देखते चारों ओर घना कोहरा छा गया है। स्वर्ग सा नजारा बेहद खूबसूरत और रोमांचित करने वाला है। दिरांग आ पहुंचे हैं। दिरांग घाटी समुद्र तल से लगभग 5120 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। नदियों से घिरे पहाड़ी क्षेत्र दिरांग की खूबसूरती देखते ही बनती है। यहाँ झूम कृषि मुख्य आजीविका का स्त्रोत है। नकदी फसलों में सेब, संतरा, अनन्नास की खेती प्रमुखता से होती है।

दिरांग गांव

यह छोटा सा गांव, इस क्षेत्र की सभी विशिष्ट गुणों को संजोये हुए है, चाहे वह परिदृश्य हो, संस्कृति या भोजन। यहां की यात्रा से पर्यटक, अरुणाचल प्रदेश की सभी बेहतरीन चीजों से परिचित हो सकते हैं। यहां के सबसे पुराने मठों में से एक है, खस्तुंग गोम्पा मठ, जो गांव से थोड़ी चढ़ाई पर स्थित है।

गांव की पहाड़ी के नीचे, हिमालय झंडों से सज्जित एक फुट ब्रिज के माध्यम से, तेज तरंग वाली दुरंग नदी तक पहुँचा जा सकता है। इस पहाड़ी की चोटी पर दिरांग जॉन्ग किला स्थित है, जो भूटानी पाषाण वास्तुकला की शैली में निर्मित है। वहाँ तक चट्टानों से कटे, पत्थर की बनी लम्बी सीढियों से चढ़ कर पहुंचा जा सकता है। इस किले का डिजाइन कुछ स्थानीय तकनीकियों का इस्तेमाल करके किया गया है, ताकि इसके निवासियों को कड़ाके की सर्दी से बचाया जा सके। इस गांव का एक और रोचक आकर्षण, गर्म पानी का एक सोता है, जिसे यहां के स्थानीय लोग पवित्र मानते हैं।

4. 2021, अप्रैल 18, पाँचवाँ एवं अंतिम दिन

यह यात्रा का अंतिम पड़ाव है। अरुणाचल से गुवाहाटी वापसी बालेमु के रास्ते हुई, जो कि भालुकपोंग के तरह ही यह भी अरुणाचल के दक्षिणी–पश्चिमी छोर पर एक प्रवेश द्वार है। बॉर्डर रोड आर्गेनाइजेशन ने बहुत ही अच्छा और सुगम रास्ता बनाया है। ये पथ भूटान के बॉर्डर के बिल्कुल समानांतर हो कर गुज़रती है । रास्ते से गुज़रते हुए सड़क के दोनों ओर घने पेड़, ताज़ी हवा सुकून देते ये पल सफर को यादगार बना रहे हैं। हफ़्ते भर की अविस्मरणीय यात्रा के बाद घर भी लौटना है। भारी मन से अरुणाचल की सुनहरी पहाड़ियों और विविधता भरी संस्कृति को अलविदा कह अंततः अपने घर लौट गए ।

आओ प्रिये नवजीवन का सृजन करें हम

श्रीमती बिन्दु कुमार, पत्नी श्री राजेश रंजन कुमार, राधि/नि.

आओ प्रिये नवजीवन का सृजन करें हम,
जीवन के सुन्दरतम भावों को हृदय में भर कर,
एक-दूसरे का श्रृंगार करें हम,
आओ प्रिये नवजीवन...
मेरी कोमलता और तुम्हारा कुलिश पौरूष लेकर,
मेरा गौरवर्ण और तुम्हारी श्यामलता लेकर,
सांसों की तापों का संचार करें हम,
आओ प्रिये नवजीवन...
प्रेम भाव में झुकना एवं युद्ध भूमि में अड़ना,
जीवन के सभी शीतलता एवं उष्णता को सहना,
ऐसी मानष-भूमि का निर्माण करें हम,
आओ प्रिये नवजीवन...
राम की सी स्थित प्रज्ञता एवं कृष्ण की सी चपल चंचलता,
मीरा की सी समर्पण भावना एवं राधा की सी प्रेम भावना,
सभी भावों का उसमें प्रवाह भरे हम,
आओ प्रिये नवजीवन...
गीता का सा हो गंभीर ज्ञान एवं बच्चों की सी हो निश्छलता,
पुष्प वाटिका की हो सुघड़ता एवं विपिन-पुष्पों की हो सरलता,
ऐसी नव सृष्टि का प्रसार करें हम,
आओ प्रिये नवजीवन...
हो बुद्ध की सी करूणा, पवनपुत्र का सा हो बाहुबल,
तप, त्याग, क्षमा एवं वीरता का भाव भरा हो जिसके अंदर,
ऐसे उदात्त भावों का समन्वय करें हम,
आओ प्रिये नवजीवन...
आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का हो ज्ञाता, सनातनता की हो जिसकी मर्यादा,
अंतरिक्ष में हो उसका प्रसार, पर अपने जड़ों से भी हो उसे प्यार,
विज्ञान की प्रगति का, कला से संस्कार करें हम,
आओ प्रिये नवजीवन...
कुसुमादपि कोमल एवं वज्रादपि कठोर,
ऐसी अद्वितीय रचना का नर्माण कर,
मातृभूमि की सेवा हेतु न्योछावर करें हम,
आओ प्रिये नवजीवन...
आओ प्रिये नवजीवन...

एक कली दो पत्तियाँ

--- श्रीमती अनिन्दिता सिन्हा, सहा. कार्यपालक इंजीनियर/नि./योजना-1

"एटी कोली दुटी पात" – इसका अर्थ है **एक कली दो पत्तियाँ** - यह प्रसिद्ध संगीतकार स्वर्गीय उस्ताद डॉ. भूपेन हजारिका के प्रसिद्ध गीत के बोल हैं, जो कुछ ही शब्दों में असम, जिसके लिए सुप्रसिद्ध है, उसके बारे में सबकुछ कह देती है और वह है "असम की चाय"। असम विश्व के चाय उत्पादक क्षेत्रों में से एक है। अधिकतर ब्रह्मपुत्र और बराक नदी द्वारा आप्लावित समतल भूमि पर उगाया जाता है, जो बढ़ते-बढ़ते घाटियों और पहाड़ी क्षेत्रों तक भी अपना रास्ता बना लिया है। असम की चाय अपनी बेहतरीन खुशबू और गहरा अम्बेर (लाल) रंग के लिए जाना जाता है।

अनुपम जलवायु, भरपूर दुम्मट मिट्टी, प्रचुर वृष्टि, धूप, हवा, समुद्र तल से ऊँचाई, जैसी भौगोलिक दशा के कारण चाय का लीकर अत्यंत तरल गुण-धर्म वाला होता है, जिसे कोई एक बार पी ले तो वह उसके बेहतरीन स्वाद, सुगन्ध और गाढ़े रंग के कारण ताजगी महसुस करने लगता है।

"असम की चाय" अथवा ऐसा सम्मिश्रण जिसमें असम की चाय भी मौजूद हो, भारत और विदेश में अक्सर संतुलित क्लासिक-चाय के रूप में बिकता है, क्योंकि इसमें सुनहरे लाल रंग के साथ प्रभावशाली सुगंध और स्वाद होता है, जो बहुत कड़क और काफी असरदार होता है।

असम की चाय में "कैमेलिया सिनेन्सिस वार. आसामिका" पौधे की पत्तियों से तैयार काली चायपत्ती का किस्म भी पाया जाता है। इसके कोमल पत्तियाँ (एक कली और दो कोमल पत्तियाँ) ध्यानपूर्वक तोड़के इनका तुरंत संसाधन किया जाता है, ताकि इनकी लाजवाब स्वाद और ताजगी बरकरार रहे।

जनवरी के मध्य से मार्च तक जब चाय के पौधों में नई पत्तियाँ लगती हैं, तो इसे "प्रथम-लालिमा" या अंग्रेजी में "फर्स्ट-फ्लश" कहते हैं। यह स्वाद और गंध में हल्का तीखा होता है। अप्रैल और जून के महीने में उगने वाली चाय पत्तियों का अलग लक्षण होता है, जो खासकर इसी अवधि में पाया जाता है, जिसे

"दूसरी लालिमा" या अंग्रेजी में "सेकण्ड-फ्लश" कहते हैं। चूँकि, इस समय पत्तियाँ थोड़ी अपरिपक्व हो जाती हैं, अत: इनका स्वाद थोड़ा कड़क हो जाता है।

असम के चाय बागानों में अपना निर्धारित समय का अनुसरण किया जाता है, जिसे "चाय-बागान का समय" या "चा-बागान टाइम" या अंग्रेजी में "टी-गार्डेन टाइम" कहते हैं, जो भारतीय मानक समय (आई.एस.टी.) से एक घंटा पहले चलता है। चूँकि, देश के इस हिस्से में सूर्योदय पहले उगता है, अत: इस बात को ध्यान में रखते हुए यह प्रक्रिया अंग्रेजी उपनिवेश के दिनों में लागू किए गए थे। कुल मिलाकर, बाद में यह प्रक्रिया चाय बागान के श्रमिकों की उत्पादकता बढ़ाने में सफल रही है क्योंकि, दिन के समय कार्य समाप्त कर दिन में ही बचत कर लिया जाता है तथा इसके विपरीत भी। पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए अनेक लोगों ने एक "पृथक - समय क्षेत्र" के लिए अभियान चलाया है।

बहरहाल, आप नए-नए चाय पीने वाले हों या अनुभवी चाय पीने वाले हों, मेरा मानना है कि दिन की शुरूआत ठीक ढंग से तैयार किए गए चाय पर निर्भर करता है। असम की चाय दूसरे किस्म की चाय की तुलना में दूध और चीनी के साथ बखूबी घुल-मिल जाती है। चाय बनाने में विशेष निपुणता और पाक-कला की आवश्यकता होती है, जो किसी-किसी में ही पायी जाती है।

असम में कुछ विशेष किस्म की चाय प्रसिद्ध है जैसे - कड़क हरे-धूम्रवर्ण की स्वाद वाले "बाँस के कोपल की चाय" या "क्वायन-टी", "सेलेका चा" (या गुड़ की चाय) जो सामान्यत: गुड़ के टुकड़े के साथ परोसा जाता है, फिर "नेमू चा" या "नींबू चाय" (लेमन-टी), "आदा चाय" या "अदरक की चाय" (जिंजर-टी) आदि।

असम की राजधानी शहर गुवाहाटी के फैंसी बाजार, पलटन बाजार, मालीगाँव, गुवाहाटी ए.टी.रोड जैसे स्थानों के चाय की दुकानों पर मिलने वाली उत्कृष्ट झागदार दूध वाली चाय, जिसे गरम-गरम आलू-मटर वाले समोसा या कटलेट के साथ परोसा जाता है, वह सभी लोगों की सुपाच्य पसंदीदा आहार है।

गुवाहाटी में "टी लॉज" है जो एक चाय निलामी केंद्र है, जहाँ राज्य के विभिन्न चाय बागानों के अनेक किस्म की चाय बेची जाती हैं।

इसलिए, यदि आप अपने क्षेत्र के बाहर एक सुखद मनोरम यात्रा की तलाश में हैं, तो असम के ये चाय बागान आपके यात्रा की बॉकेट लिस्ट में होने चाहिए।

गजल

---- श्री मुकेश कुमार, डाटा इंट्री परिचालक(लेखा परीक्षा)/निर्माण

मुश्किल हो चाहे जैसी भी, हिम्मत ना हारिये।

हिम्मत से बिगड़े कामों को, अपने संवारिये।।

कोई अगर हो काम तो, फिर मन से कीजिये।

चादर हो जितनी लंबी, पांव उतना पसारिये।।

गैरों से क्यों फिजूल, मदद मांगते हैं आप।

मुश्किल कोई पड़े तो, खुदा को पुकारिये।।

घबराइए ना आप, किसी काम से जनाब।

बेकार जिंदगी को, न अपनी गुजारिये।।

जिसमें ना हो महारत, न कीजिए उस काम को।

रूसवाई होगी इसलिए, चित से उतारिए।।

इज्जत मिलेगी काम हीं, करने से दोस्तों।

जैसा भी काम आये, उसे कर गुजारिये।।

गैरों में है बुराई तो, मत उस काम को कीजिए।

अच्छाई जिसमें हो नहीं, उसको बिसारिये।।

वह हौसला बुलंद तो, सब लोग देंगे साथ।

हिम्मत को रखिए साथ में, आलस्य को मारिये।।

हिम्मत का फल मिलेगा आप सभी को।

अच्छे कर्मों से देश-समाज को संवारिये।।

नदी की धारा में एच.एफ.एल. का निर्धारण

--- श्री कौस्तभ कलिता, सीनि.से.इंजी./नि./योजना-1

- क्या
- What?
- बड़े पुलों के स्थल पर एच एफ एल का निर्धारण
- Determination of HFL at location of major Bridges
- क्यों?
- Why?
- योजना के दृष्टिकोण से पुल के विभिन्न पहलू (aspect) को शामिल करना, (पुल की सिधाई/alignment, स्पैन प्रबंधन/arrangement, तट सुरक्षा इत्यादि)
- To cover various aspect of Bridge from planning perspective(bridge alignment,span arrangement, bank protection etc.)
- कैसे?
- How?

नदी की धारा में एच एफ एल का निर्धारण

Determination of HFL in Streams

- दो विधि से किया जा सकता है।
- Can be divided into two methods
- 1. बाढ़ हाइड्रोग्राफ विधि

- 1. Flood Hydrograph
- 2. आवृत्ति विश्लेषण या सांख्यिकी विधि
- 2. Frequency Analysis/Statistical method
- बाढ़ हाइड्रोग्राफ विधि
- Flood Hydrograph method
- समय के साथ बहाव (एम^3 प्रति सेकेण्ड) में भिन्नता दिखलाता है।
- Shows variation in discharge(m^3 per sec) over time.
- आँधी हाइड्रोग्राफ रेनफॉल इनपुट के प्रभाव को दर्शाता है।
- Storm hydrograph shows effects of rainfall input.
- औसत स्तर भूजल आपूर्ति वाले जल के बेस फ्लो को दर्शाता है।
- The average levels represent the base flow of water produced from groundwater supply.
- दोनो शाखाओं को "उठान" एवं "ढ़लान" शाखा कहते हैं जबकि अधिकतम वर्षा और नदी में अधिकतम बहाव के बीच के समय के अंतर को अंतराल समय कहते हैं।
- The two limbs are called the rising and recession limbs while the time delay between max rainfall and max river discharge is called the lag time.
- बाढ़ हाइड्रोग्राफ/Flood Hydrograph

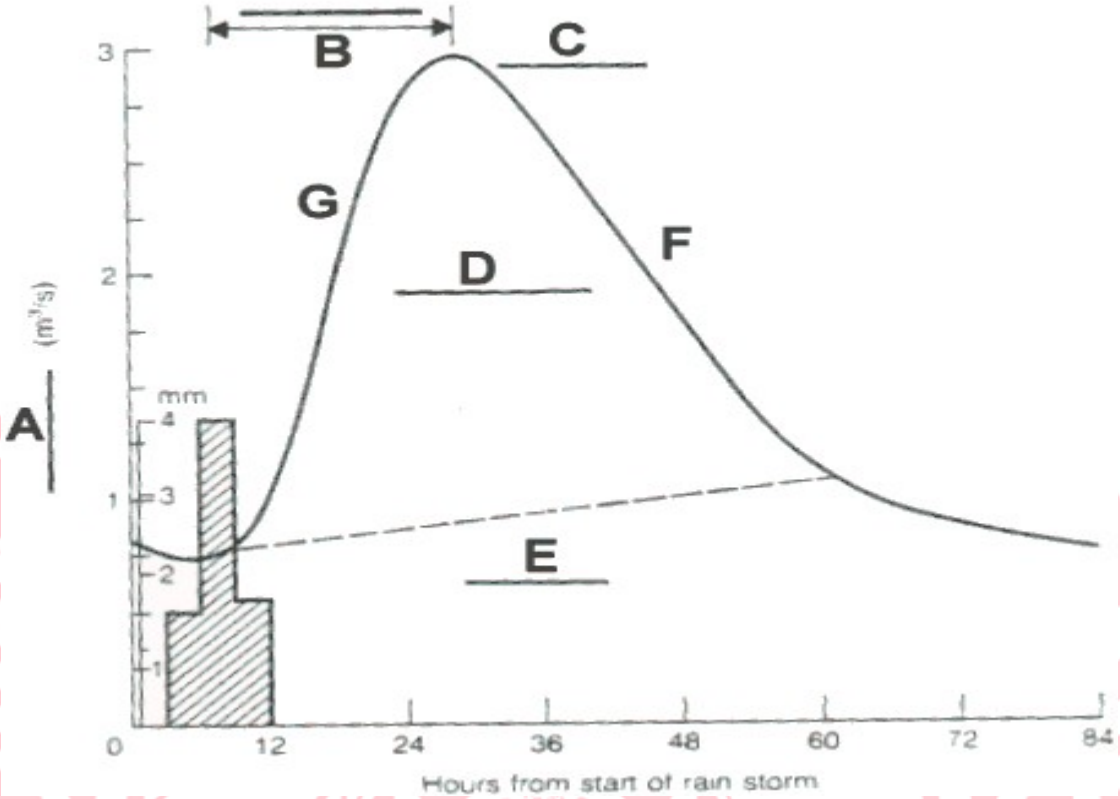

- A-बहाव / DISCHARGE
- B-अंतराल समय / LAG TIME

(चट्टान पारगम्यता permeability और वनस्पति अवरोधन interception

द्वारा प्रभावित)

- (Affected by rock permeability and vegetation interception)
- C-पीक बहाव / PEAK DISCHARGE
- D-बाढ़ग्रस्त इलाके / ZONE OF FLOOD RISK
- E-सामान्य (तल) बहाव / NORMAL (BASE) DISCHARGE
- F-ढ़लान शाखा / RECESSION LIMB

- **G-उठान शाखा / RISING LIMB**

स्नाइडर यूएच का निर्माण नीचे दिए गए चरणबद्ध तरीके से किया जा सकता है।

Following are the steps that you may find useful for constructing snyder UH:

- **1. दिए गए C_t और C_p के लिए अंतराल समय t_l निकालें।**
- **Compute the lag time t_l for given C_t and C_p.**
- **2. पीक बहाव दर Q_p निकालें।**
- **Compute the peak flow rate Q_p.**
- **3. समय आधार t_b निकालें। छोटे वाटरशेड्स के लिए समय को पीक से 3 को 5 से गुणा कर समय आधार निकाला जा सकता है।**
- **Find time base t_b. For small watersheds, time base can be estimated by multiplying time to the peak by 3 to 5.**

4. वर्षा D की अवधि निकालें। Find duration of rainfall D.

5. पीक बहाव के 50% एवं 75% पर हाइड्रोग्राफ को आकार प्रदान करने के लिए अक्ष W_{50} और W_{75} का व्यवहार करें। Q_p से

1/3 पहले और Q_p के 2/3 बाद W_{50} और W_{75} स्थित है।

Use W_{50} and W_{75} ordinates for shaping the hydrograph at 50% and 75% of the peak flows. W_{50} and

W_{75} are located at 1/3 before Q_p and 2/3 after Q_p.

6. यह सुनिश्चत करें कि यूनिट हाइड्रोग्राफ का निर्मित क्षेत्रफल 1.0 है।

Ensure that the area under the constructed unit hydrograph is 1.0.

यूनिट हाइड्रोग्राफ निकालने के लिए इम्पेरिकल संबंध(स्नाइडर विधि)

Emperical relations for computing unit hydrograph(Synder's method)

- $t_p=C_t(LL_c)^{0.3}$
- $t_r=(t_p/5.5)$
- $Q_{ps}=2.78C_pA/t_p$
- $t'_p=(21/22)t_p+ t_r/4$
- $T_p= 72+ t'_p$
- $W_{50}=5.87/(q)^{1.08}$
- $W_{75}= W_{50}/1.75$

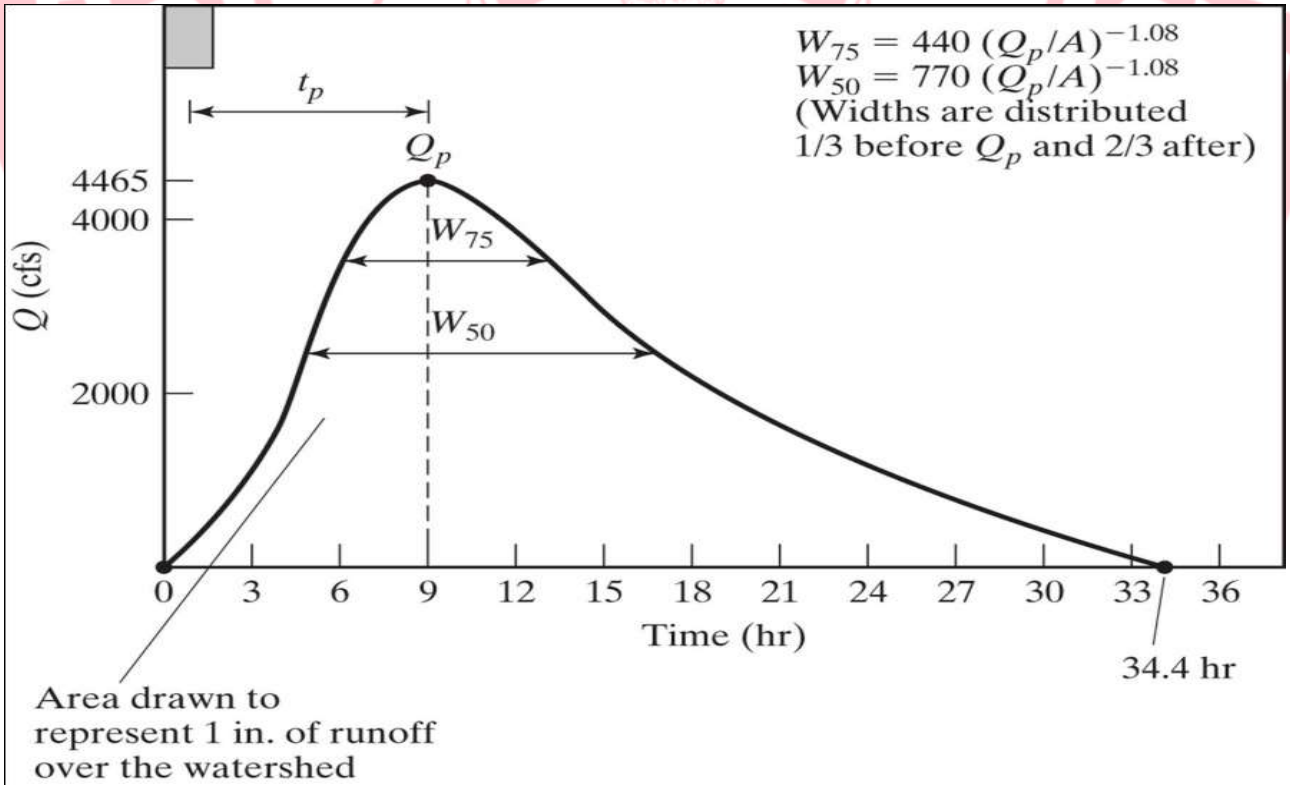

भविष्य के बाढ़ की घटनाओं के साथ उनकी संभावनाओं और वापसी की भविष्यवाणी करने के लिए यह विधि पूर्व आंकड़ों का व्यवहार करता है।

This method make use of observed data in the past to predict the future flood events along with their probabilities and return periods.

सैद्धांतिक संभाव्यता वितरण का इस्तेमाल किया जाता है,जो मुख्यत:

Theoritical probability distribution are used, which are mainly

1. गम्बल वितरण

Gumbel's Distribution

1. लॉग पियर्सन टाइप III वितरण कहलाता है।

Log pearson type III Distribution

गम्बल संभाव्यता वितरण प्रणाली

Gumbells probability distribution function

- -b
- $P(X \geq x) = 1-e^{-e}$

$$b=1/(0.7797\sigma).(x-\bar{x}+0.45\sigma)$$

उदयपुर के गोमती नदी में किए गए घटनावार अध्ययन

Case study on Gumti River at Udaipur

वर्ष	बाढ़ का परिमाण (X) क्यूबिक मी./ से. में	क्रम/अनुक्रम	$(X-\bar{X})$	$(X-\bar{X})^2$	P(X≥x) m/(n+1)	T=1/P
1987	1002.84	1	400.182	160145.63	1/31	31
1985	750.64	2	147.982	21898.67	2/31	15.5
1988	740.56	3	137.902	19016.96	3/31	10.33
1976	734.00	4	131.342	17250.72	4/31	7.75
1975	709.02	5	106.362	11312.87	5/31	6.2
1978	706.56	6	103.902	10795.62	6/31	5.16
1995	692.44	7	89.782	8060.8	7/31	4.42
1999	687.45	8	84.792	7189.68	8/31	3.875
1979	680.00	9	77.342	5981.78	9/31	3.44

वर्ष	बाढ़ का परिमाण (X) क्यूबिक मी./से. में	क्रम/अनुक्रम	$(X-\bar{X})$	$(X-\bar{X})^2$	$P(X\geq x)$ m/(n+1)	T=1/P
1982	675.49	10	72.832	5304.5	10/31	3.10
1977	616.32	11	13.662	186.65	11/31	2.82
1984	608.00	12	5.342	28.53	12/31	2.58
1989	596.24	13	-6.418	41.19	13/31	2.38
1986	594.33	14	-8.328	69.35	14/31	2.21
1990	592.37	15	-10.288	105.84	15/31	2.06
2003	588.64	16	-14.018	196.50	16/31	1.93
1998	583.78	17	-18.878	356.37	17/31	1.82
1983	575.66	18	-26.998	728.89	18/31	1.72

वर्ष	बाढ़ का परिमाण (X) क्यूबिक मी./से. में	क्रम/ अनुक्रम	$(X-\bar{X})$	$(X-\bar{X})^2$	P(X≥x) m/(n+1)	T=1/P
2002	571.25	19	-31.408	986.46	19/31	1.63
2000	568.21	20	-34.448	1186.66	20/31	1.55
2001	566.87	21	-35.788	1280.78	21/31	1.47
1993	560.12	22	-42.538	1809.48	22/31	1.40
1974	551.84	23	-50.818	2582.46	23/31	1.35
1981	545.72	24	-56.938	3241.93	24/31	1.29
1980	530.00	25	-72.658	5279.18	25/31	1.24
1991	500.00	26	-102.658	10538.66	26/31	1.19
1997	495.00	27	-107.658	11590.24	27/31	1.14

वर्ष	बाढ़ का परिमाण (X) क्यूबिक मी./ से. में	क्रम/अनुक्रम	$(X-\bar{X})$	$(X-\bar{X})^2$	$P(X\geq x)$ m/(n+1)	T=1/P
1996	410.92	28	-191.738	36763.46	28/31	1.1
1992	330.21	29	-272.448	74227.91	29/31	1.06
1994	315.26 $\sum X=18079.74$ $\bar{X}=602.658$	30	-287.398	82597.61 $\sum(X-\bar{X})^2=500755.49$	30/31	1.03

गम्बल संभाव्यता वितरण प्रणाली

Gumbells probability distribution fuctuion

-b

- $P(X\geq x) = 1-e^{-e}$
- $b=1/(0.7797\sigma).(x-\bar{x}+0.45\sigma)$
- From table we get $\bar{X}=602.658$
- $\sigma = \sqrt{\sum(X-\bar{X})^2/(n-1)} = \sqrt{500755.49/29}=131.4$

-b

$P(X\geq x) = 1/T = 1-e$

- T= 50 years
- -b
- $=>.02= 1-e^{-e}$
- $=>-e^{-b} = -0.0202$
- $=>b= 3.902$
- पुन:
- $b=1/(0.7797\sigma).(x-\bar{x}+0.45\sigma)$
- $=>3.902=^{1/(0.7797.131.40).(x-x602.658+0.45.131.4)}$
- $=>X=943.297$

Q_{50} =943.297 cumec

पिताजी

--- श्री मुन्नी लाल गुप्त,

सुपत्र श्री मुकेश कुमार, डाटा इंट्री परिचालक(लेखा परीक्षा)

सबसे पहले ईश्वर हैं जो पूजे जाते हैं।
फिर माता पिता सब के, तब गुरूजी आते हैं।

पिता छत्र-छाया बन के विपदा से बचाते हैं।
श्रृंगार है माता का, वही घर को चलाती हैं।

मैं पिता की महिमा का, गुणगान ये करता हूँ।
उनके रहते गम में, हम राहत पाते हैं।

छोटी सी घटना में, हम ऊई माँ कहते हैं।
जब बड़ी दुर्घटना हो, अरे बाप बुलाते हैं।

माँ दूध पिला कर के, इस तन को पालती हैं।
और बाप कमा कर के, बच्चों को पढ़ाते हैं।

जन्नत का दरवाजा, माना कि पिताजी हैं।
जन्नत का सुख माँ के, चरणों में पाते हैं।

कहता है मुन्नी लाल, माँ-बाप की सेवा कर।
सागर हैं पिता जिसमें, हम गोता लगाते हैं।

****

मनमोहक रेल यात्रा

---श्री कुलदीप तिवारी, सीनि.से.इंजी./नि./अभिकल्प

"प्रत्येक रेल का यही सपना, हो गतिशील भारत और स्वच्छ पर्यावरण अपना"

1. प्रस्तावना :

भारतीय रेल, यह भारत सरकार नियंत्रित सार्वजनिक रेल सेवा है। भारत में रेल की कुल लंबाई 67415 कि.मी. है। भारतीय रेल रोजाना 231 लाख यात्रियों और 33 लाख टन माल ढोती है। भारतीय रेल के स्वामित्व में 12146 लोकोमोटिव, 74003 यात्री कोच और 289184 वैगन हैं और 8702 यात्री ट्रेनों के साथ प्रतिदिन कुल 13423 ट्रेनें चलती है। भारतीय रेल में 300 रेल

यार्ड, 2300 माल ढुलाई और 700 मरम्मत केन्द्र है। यह दुनिया की चौथी सबसे बड़ी रेल सेवा है। 12.27 लाख कर्मचारियों के साथ, भारतीय रेल दुनिया की आठवीं सबसे बड़ी व्यावसायिक इकाई है। रेल विभाग की सभी योजनाएँ रेलवे बोर्ड द्वारा बनाई जाती हैं। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि भारतीय रेल यात्रा एवं रोजगार का बहुत बड़ा माध्यम है।

2. **रेल-यात्रा का वर्णन** :

एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना यात्रा कहलाता है। यात्रा चाहे किसी भी माध्यम से हो, चाहे वह हवाई जहाज से हो, चाहे वह रेल से हो, चाहे वह बस से हो या चाहे वह कार से हो हमेशा आनंददायक होता है।

परन्तु रेल यात्रा सबसे सस्ता, सरल एवं सुगम माध्यम है। एक रेल यात्रा निश्चित रूप से एक शानदार खुशी का अवसर प्रदान करती है। यात्रा की लंबी दूरी तय करना यात्रा का यह सबसे अच्छा तरीका है। आरामदायक यात्राएँ रेल यात्रा का एक महत्वपूर्ण अंग है। रेल यात्रा

किसी अन्य यात्रा की तरह विशिष्टता प्रदान करती है। रेल की यात्रा वास्तव में संगीतमय एवं आनंददायक अनुभव प्रदान कराती है।

ऐसी ही मेरी एक रेल यात्रा है जिसने मुझे एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करवाया। मैंने रेल से अनेक बार यात्राएँ कीं, किन्तु एक बार की रेलयात्रा मुझे सदा याद रहेगी। यह बात वर्ष 2005 की है, जब मैं ग्रीष्मावकाश में अपने परिवार के साथ रेल यात्रा द्वारा हरिद्वार गया।

जिस दिन हम सबको हरिद्वार के लिए रवाना होना था, दिल्ली में घनघोर वर्षा हो रही थी। रेल स्टेशन तक किसी प्रकार पहुँचने पर पता चला कि ट्रेन आधा घंटा विलम्ब से जाएगी। बाहर घनघोर वर्षा हो रही थी। हम सब ट्रेन की प्रतीक्षा हेतु प्रतीक्षालय पहुँचे। प्लेटफॉर्म पर प्रत्येक तरफ यात्री तेजी से आते-जाते दिख रहे थे। बीच-बीच में फेरीवालों की आवाजें भी सुनाई दे रही थी। ट्रेन की घोषणा जैसे ही होती थी, सभी शांतिपूर्वक सुनने लगते थे।

ट्रेन आने पर हम सब अपनी-अपनी सीट पर बैठ गए। मेरे साथ मेरे माता-पिता व दादी थीं। कुछ ही देर में ट्रेन स्टेशन से रवाना हो गई। मैं कौतुहलवश खिड़की के पास वाली सीट पर ही बैठा था। ट्रेन में बैठने के बाद मैं अपनी ट्रेन की खिड़की से बाहर की तरफ देख रहा था। सुंदर पहाड़ी, खेत-खलिहान और बाग-बागीचों समेत चारों तरफ हरियाली का दृश्य अति सुन्दर और मनमोहक लग रहा था। बाहर घनघोर वर्षा हो रही थी। ठंडी-ठंडी हवा जोर से चल रही थी, बादल शेरों की तरह गरज रहे थे। हरे-हरे खेत लहलहा रहे थे। पक्षी चहचहा रही थीं, मोर वनों में नाच रहे थे एवं विशालकाय वृक्ष और ऊँचे-ऊँचे आसमान को छूते हुए पर्वत दृश्य को शोभायमान कर रहे थे। नदियाँ अपनी चरम सीमा पर कलकल करती हुई बह रही थी।

यह दृश्य ऐसा लग रहा था मानों, इन्द्र भगवान स्वंय इन्द्रलोक में अप्सराओं के साथ नृत्य-गान कर रहे हों। वास्तव में, यह बहुत ही मनमोहक एवं मर्मस्पर्शी दृश्य था, जहाँ से एक पल के

लिए भी नेत्र हटाने का मन नहीं कर रहा था। कुछ समय पश्चात् सभी लोग व्यवस्थित होकर बैठ गए। लोग अपने-अपने साथ लाया हुआ खाना खोल कर खाने लगे। पूरे डिब्बे में भोजन की खुशबू फैल गयी और वातावरण सुगन्धमयी हो गया। वहाँ सभी जाति, वर्ण और सम्प्रदाय के लोग थे। धर्मनिरपेक्ष भारत वहाँ दिखाई दे रहा था।

बाहर चीड़ के पेड़ों से ढंकी पहाड़ियों का दिलकश नजारा था। चारों तरफ हरियाली थी। वर्षा को उत्सुकतापूर्वक देखा जा रहा था। हम सभी रेलगाड़ी के एक वातानुकूलित डिब्बे में जाकर बैठ गए।

यहाँ बड़ी-बड़ी आरामदायक सीटें थीं और ट्रेन का डिब्बा एक कमरे की तरह बड़ा था। ट्रेन में सभी तरह की सुविधाएँ थीं। गर्मी के लिए ए.सी. और पंखे की सुविधा थी, तो सर्दी के लिए हीटर की

भी सुविधा थी। रेल के डिब्बे में रोशनी की सुविधा के लिए कई लाइटें लगी हुई थीं। मुझे ऐसा लगा था कि मानो मैं किसी कमरे में बैठा हूँ।

जब रेलगाड़ी एक स्टेशन पर रूकी, तभी चाय बेचने वाला जोर-जोर से चाय-चाय चिल्ला रहा था। कुछ लोग ट्रेन में चढ़ रहे थे, तो कुछ उतर रहे थे। स्टेशन पर फेरीवाले चिल्ला-चिल्ला कर सामान बेच रहे थे। हम सभी लोग गरम-गरम चाय का लुत्फ उठा रहे थे। स्टेशन पर एक व्यक्ति अखबार और कुछ पत्रिकाएँ बेच रहा था। मैंने उससे एक अखबार और एक पत्रिका खरीद ली।

धीरे-धीरे रेलगाड़ी पहाड़ी क्षेत्र में प्रवेश करने लगी थी। सूरज पहाड़ी की ओट में डूब रहा था। चारों तरफ लालिमा छायी हुई थी। यह बहुत ही सुहावना एवं मनमोहक दृश्य था। वातावरण की रमणीयता देखकर मेरा हृदय फुला न समाया। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और उन पर पेड़ पौधों की हरी चादर का दृश्य देखकर मुझे बहुत ही मनोरम लग रहा था।

3. उपसंहार :

रेल यात्रा के कई लाभ हैं, लेकिन कुछ नुकसान भी हैं। अगर हम अंतरिक्ष और आराम की दृष्टि से देखें तो रेल, परिवहन का सबसे अच्छा साधन है। रेलगाड़ियाँ सोने और धोने के बर्थ की पेशकश करती हैं। हवाई जहाज में एक सामान ले जाने की सीमा होती है। बहुत सारे सामान को समायोजित करने के लिए बसों में पर्याप्त जगह नहीं होती। हालांकि, रेल के सफर के दौरान ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं है। रेलगाड़ियों को बसों, कारों और हवाई जहाज की तुलना में सुरक्षित साधन माना जाता है। रेलगाड़ियों में आप अपनी पुस्तक को आरामदायक तरीके से पढ़ सकते हैं एवं बुनाई और सिलाई जैसे अन्य कार्य में लिप्त हो जाते हैं।

परन्तु, रेलगाड़ियों में यात्रा करने के कुछ नुकसान भी है, जैसे- आपकी यात्रा की तारीख से पहले अपनी यात्रा महीनों या हफ्तों की योजना बनानी होगी। रेल आरक्षण एक मुश्किल काम है। आरक्षण टिकट केन्द्रों पर जाना पड़ता है और घंटों कतार में खड़ा रहना पड़ता है, जो बेहद ही असुविधाजनक है।

रेलगाड़ियाँ तय समय पर चलती हैं। आपको विषम समय में रेलगाड़ियों को पकड़ने की आवश्यकता हो सकती है और यह कई बार मुश्किल हो सकता है।

रेलगाड़ियों से लम्बी दूरी तय करना भी बहुत आपत्तिजनक है। यह विमानों के विपरीत है, जो कुछ ही घंटों में समान दूरी तय कर सकते हैं।

रेलगाड़ियों के जो शौचालय होते हैं उन्हें अच्छी तरह से बनाए नहीं रखा जाता है। यह संक्रमण का कारण बन सकता है। गौरतलब है कि जहाँ रेलगाड़ियों के कुछ लाभ है, तो कुछ हानियाँ भी हैं। फिर भी रेलगाड़ियाँ यात्रा का सबसे सरल, सुगम एवं सस्ता माध्यम है।

“जो कराती अपनों से मेल, वही कहलाती भारतीय रेल “

रेल की भाषा, मेल की भाषा,

देश की भाषा, हिंदी भाषा ।

।।ओस की बूँदें।।

--- श्री रामकेश मीना, सीनि.से.इंजी./निर्माण/निविदा

रात के 9 बजे महानगर की एक बहुमंजिला इमारत के दूसरे तल पर एक फ्लैट के रसोईघर की

खिड़की पर जमी ओस की बूँदें देख कर तीन वर्ष की लावण्या ने मम्मी से मासूमियत से पूछा, मम्मी ये क्या है? माँ ने जवाब दिया ओस की बूँदें है। पिछले तीन साल में ज्यादातर वह इसी महानगर में जहाँ उसके पापा की रेलवे में नौकरी है, उनके साथ ही रही है। अपने गाँव में साल में दो तीन बार केवल चार छः दिन के लिए ही जा पाती है।

गाँव में प्रकृति की निकटता और प्रकृति के सानिध्य में रहने का अनुभव उसे नहीं है। यहां मिट्टी में भी कभी नहीं खेल पाती। जरा सी सर्दी लगने पर जुखाम बुखार शुरू हो जाता है। वहीं गाँव में बच्चे दिन भर नंगे पाँव घास और मिट्टी में खेलते रहते हैं। वही घास जिस पर सुबह-शाम ओस की बूँदें जम जाती हैं।

पूर्वोत्तर सीमा रेल में राजभाषा संगठन का अविर्भाव एवं विकास

--- राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण

रेल सेवा का सीधा संपर्क आम जनता से है। जनसंपर्क के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेल में अंग्रेजी के अलावा हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का सहारा लिया जाता रहा है। इस रेल में हिन्दी के प्रयोग-प्रसार के प्रति जागरूकता इसी से स्पष्ट है कि सन् 1958 में हिन्दी प्रकोष्ठ का गठन हुआ। इसके दो वर्षों के भीतर अर्थात् सन् 1960 के प्रारम्भ में इस रेल में हिन्दी अधीक्षक के पद तथा उसी वर्ष के अंत तक एक अनुवादक के पद पर भी कर्मचारी नियुक्त किए गए। सन् 1961 में हिन्दी पर्यवेक्षक का पद बनाया गया।

पूर्वोत्तर सीमा रेल में सन् 1961-62 में हिन्दी संगठन का काफी विकास हुआ। इस वर्ष इस रेल के मुख्यालय में हिन्दी अधीक्षक एवं हिन्दी पर्यवेक्षक के अलावा 3 (तीन) प्रधान अनुवादक, 5 (पाँच) वरिष्ठ अनुवादक और 2 (दो) कनिष्ठ अनुवादक के पद बनाए गए और सन् 1962 के अंत तक करीब सभी पदों पर कर्मचारियों की नियुक्ति हो गयी। इन कर्मचारियों के जिम्में मुख्य रूप से नियम पुस्तक, कार्यविधि साहित्य, रिपोर्ट, परिपत्र, सामान्य पत्राचार आदि का अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद का कार्य सौंपा गया। इनकी सहायता के लिए टंकक, लिपिक एवं अन्य कर्मचारी भी दिए गए। इसी प्रकार हिन्दी न जानने वाले कर्मचारियों के हिन्दी प्रशिक्षण की व्यवस्था, नोटिस बोर्ड, साइन बोर्डों का द्विभाषीकरण, हिन्दी प्रशिक्षण के लिए पुस्तकालयों आदि के गठन और विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिताओं आदि के आयोजन के द्वारा हिन्दी के पठन-पाठन और सरकारी कामकाज में उसके उपयोग के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए सन् 1961-62 में ही हिन्दी निरीक्षकों के 6 (छः) पद बनाए गए और पूर्वोत्तर सीमा रेल में तत्कालिन 4 (चार) जिलों यथा कटिहार, अलीपुरद्वार, लमडिंग और डिब्रूगढ़ में 1 (एक) हिन्दी निरीक्षक, 1 (एक) टंकक और 1 (एक) हिन्दी लिपिक नियुक्त कर हिन्दी अनुभागों की स्थापना की गयी। हिन्दी प्रशिक्षण के लिए सन् 1963 तक इस रेल के मुख्यालय में गृह मंत्रालय की हिन्दी शिक्षण केन्द्र स्थापित हो गया था तथा ऐसे स्थानों पर जहाँ गृह मंत्रालय के केन्द्र नहीं थी वहाँ विभागीय व्यवस्था की गयी थी।

उसके बाद समय-समय पर रेलवे बोर्ड द्वारा हिन्दी पदों की क्रमोन्नति (अर्थात् अपग्रेडेशन) अथवा नए पदों के सृजन के माध्यम से हिन्दी संगठन को सुदृढ़ बनाया गया। सन् 1981-82 तक पूर्वोत्तर सीमा रेल के मुख्यालय तथा मंडल कार्यालयों में कुल मिलाकर वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी के 3 (तीन) पद, हिन्दी सहायक ग्रेड-2 के 11 (ग्यारह) पद और हिन्दी सहायक ग्रेड-3 के 12 (बारह) पद दिए गए। इन पदों के अलावा हिन्दी आशुलिपिक और हिन्दी टंककों के पद भी दिए गए। पूर्वोत्तर सीमा रेल में वर्तमान में पूर्णकालिक हिन्दी पुस्तकालय का पद नहीं है। हिंदी पुस्तकालय का कार्य आंशिक रूप से वरिष्ठ अनुवादक द्वारा ही किया जा रहा है।

अधिकारियों की स्थिति इस प्रकार है - वर्तमान परिप्रेक्ष में देखा जाए तो 15 अक्टूबर, 2008 तक मुख्यालय, मालीगाँव में कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (JAG) में पदनाम "उप मुख्य राजभाषा अधिकारी" था जो 16 अक्टूबर,

2008 से "उप महाप्रबंधक (राजभाषा)" हो गया। 30 जून, 2021 के आंकड़ों के अनुसार मुख्यालय, मालीगाँव में उप महाप्रबंधक (राजभाषा) का 01 (एक) पद स्वीकृत है और अधिकारी पदस्थापित हैं। उसी प्रकार वरिष्ठ वेतनमान में वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी का 01 (एक) पद स्वीकृत है और अधिकारी पदस्थापित हैं। मुख्यालय के अंतर्गत 05 मंडलों में स्थिति इस प्रकार है - 1. कटिहार मंडल में वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी का 1 (एक) पद स्वीकृत है और वर्तमान में यह पद तिनसुकिया मंडल में स्थानांतरित है जो वर्तमान में रिक्त है। तिनसुकिया मंडल का कनिष्ठ वेतनमान के राजभाषा अधिकारी का पद कटिहार मंडल में परिचालित किया जा रहा है, जिस पर अधिकारी पदस्थापित हैं। 2. अलीपुरद्वार मंडल में राजभाषा अधिकारी का 1 (एक) पद स्वीकृत है और अधिकारी पदस्थापित हैं। 3. रंगिया मंडल में राजभाषा अधिकारी का 1 (एक) पद स्वीकृत है और अधिकारी पदस्थापित हैं। **लमडिंग मंडल में भी राजभाषा अधिकारी का 1 (एक) पद स्वीकृत है, परन्तु यह पद अगस्त, 2019 से रिक्त है।** इसी प्रकार **तिनसुकिया मंडल में वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी का पद दिसम्बर, 2019 से रिक्त है।** महाप्रबंधक (निर्माण) कार्यालय में राजभाषा अधिकारी/निर्माण का वर्कचार्ज पद है। यह पद 01 सितम्बर, 2018 से रिक्त था जो 01 फरवरी, 2019 से अधिकारी पदस्थापित हैं।

कर्मचारियों की स्थिति इस प्रकार है - 1. ***मुख्यालय, मालीगाँव*** में वरिष्ठ अनुवादक के 08 स्वीकृत पद हैं और सभी पदों पर कर्मचारी पदस्थापित हैं। कनिष्ठ अनुवादक के 04 पद स्वीकृत हैं, जिस पर सिर्फ 01 पद पर कर्मचारी पदस्थापित है और 03 पद रिक्त है। 2. ***कटिहार मंडल*** में वरिष्ठ अनुवादक के 03 पद स्वीकृत हैं और सभी पदों पर कर्मचारी पदस्थापित हैं। कनिष्ठ अनुवादक में 05 स्वीकृत पद हैं परन्तु सभी पद रिक्त हैं। 3. ***अलीपुरद्वार मंडल*** में वरिष्ठ अनुवादक के 02 पद स्वीकृत हैं और सभी पदों पर कर्मचारी पदस्थापित हैं। कनिष्ठ अनुवादक के 03 पद स्वीकृत हैं और सभी पद रिक्त हैं। 4. ***रंगिया मंडल*** में वरिष्ठ अनुवादक के 02 पद स्वीकृत हैं और सभी पदों पर कर्मचारी पदस्थापित हैं। कनिष्ठ अनुवादक के 01 पद स्वीकृत हैं और यह पद रिक्त है। 5. ***लमडिंग मंडल*** में वरिष्ठ अनुवादक के 01 पद स्वीकृत है और 02 वरिष्ठ अनुवादक पदस्थापित हैं क्योंकि 01 पद तिनसुकिया मंडल से 01 (एक) वर्ष के लिए अस्थायी तौर पर लाया गया है। कनिष्ठ अनुवादक के 04 पद स्वीकृत है और सभी पद रिक्त हैं। 6. ***तिनसुकिया मंडल*** में वरिष्ठ अनुवादक के फिलहाल 01 पद स्वीकृत है और 01 पद एक वर्ष के लिए लमडिंग में परिचालित हो रहा है। वरिष्ठ अनुवादक का स्वीकृत 01 पद भी रिक्त है। कनिष्ठ अनुवादक का 04 स्वीकृत पद हैं और सिर्फ 01 पद पर कर्मचारी पदस्थापित है, शेष 03 पद रिक्त है। 7. ***न्यू बंगाईगाँव कारखाने*** में वरिष्ठ अनुवादक का 01 पद स्वीकृत है और कर्मचारी पदस्थापित है। कनिष्ठ अनुवादक का 01 पद स्वीकृत है और यह पद रिक्त है। 8. ***डिब्रूगढ़ कारखाने*** में वरिष्ठ अनुवादक 01 पद स्वीकृत है और कर्मचारी पदस्थापित है। कनिष्ठ अनुवादक का 01 पद स्वीकृत है और यह पद रिक्त है। कुछ ऐसे भी स्वतंत्र इकाई हैं जहाँ अनुवादक कार्यरत हैं जैसे - 9. ***मुख्य जनसंपर्क अधिकारी /मुख्यालय, मालीगाँव*** में वरिष्ठ अनुवादक का 01 पद स्वीकृत है और कर्मचारी पदस्थापित है। 10. ***रेल भर्ती बोर्ड, गुवाहाटी*** में कनिष्ठ अनुवादक का 01 पद स्वीकृत है, और यह पद रिक्त है। 11. ***रेल भर्ती बोर्ड, सिलीगुड़ी*** में वरिष्ठ अनुवादक का 01 पद स्वीकृत है और कर्मचारी पदस्थापित है। 12. ***गुवाहाटी स्टेशन*** में कनिष्ठ अनुवादक का 01 पद स्वीकृत है

और कर्मचारी पदस्थापित है। 13. ***कटिहार स्टेशन*** में कनिष्ठ अनुवादक का 01 पद स्वीकृत है और यह पद रिक्त है। 14. ***पूर्णिया स्टेशन*** में कनिष्ठ अनवादक का 01 पद स्वीकृत है और यह पद रिक्त है। इसी तरह 15. ***महाप्रबंधक (निर्माण)/मालीगाँव*** कार्यालय में वरिष्ठ अनुवादक के 04 पद स्वीकृत हैं और 03 कर्मचारी पदस्थापित हैं तथा 01 पद रिक्त है। इस प्रकार संपूर्ण रूप से देखा जाए तो पूर्वोत्तर सीमा रेल में **वरिष्ठ अनुवादक के पद** पर 24 कर्मचारी ही कार्यरत हैं और **निर्माण कार्यालय में 01 पद रिक्त है।** इसी प्रकार **कनिष्ठ अनुवादक के** कुल 27 स्वीकृत पद हैं, जिनपर मात्र 03 कर्मचारी ही कार्यरत हैं अर्थात् मुख्यालय में 01, तिनसुकिया में 01 और गुवाहाटी स्टेशन में 01, **शेष 24 पद रिक्त पड़े हैं।** हालांकि रिक्त पदों को यथासंभव भरे जाने की प्रक्रिया यथाशीघ्र पूरी होने की सभावना है। इतनी संख्या में पदों के रिक्त होने के बावजूद पूर्वोत्तर सीमा रेल राजभाषा हिन्दी के विविध पहलुओं में पर्याप्त प्रगति कर रही है। जैसे कुछ उदाहरण इस प्रकार है -

1. **राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ** - इस रेल मे वर्ष 1986-87 में 34 राजभाषा कार्यान्वन समितियाँ थीं जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 62 हो गयी है। अर्थात् कटिहार मंडल में 16, अलीपुरद्वार मंडल में 11, रंगिया मंडल में 09, लमडिंग मंडल में 11, तिनसुकिया मंडल में 13, महाप्रबंधक/ मुख्यालय, मालीगाँव में 01 तथा महाप्रबंधक/निर्माण,मालीगाँव में 01. इन कार्यान्वयन समितियों में राजभाषा नीति तथा बोर्ड से समय-समय पर प्राप्त निदेशों को कार्यान्वित करने के लिये व्यावहारिक सुझाव दिए जाते हैं। राजभाषा के प्रयोग-प्रसार पर निगरानी रखी जाती है और समिति द्वारा लिए गए निर्णयों पर अमल करने के लिए अनुवर्ती कार्रवाई की जाती है।
2. **हिन्दी पुस्तकालय तथा वाचनालय** - राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए हिन्दी पुस्तकालयों और वाचनालयों का महत्व असंदिग्ध है। पूर्वोत्तर सीमा रेल में इसके महत्व को आरंभ में ही आंका गया था। मुख्यालय, कटिहार, अलीपुरद्वार जंक्शन, लमडिंग, तिनसुकिया और डिब्रूगढ़ में हिन्दी पुस्तकालय और वाचनालय की स्थापना वर्ष 1963 में कर दी गयी थी। धीरे-धीरे अन्य स्थानों पर भी हिन्दी पुस्तकालयों की स्थापना की गयी। वर्ष 1982-83 में इस रेल में कुल हिन्दी पुस्तकालयों की संख्या 26(छब्बीस) थी और पुस्तकों की संख्या 61,000 (इकसठ हजार) 1986-87 में 34 (चौंतीस) हो गयी और पुस्तकों की संख्या 76,000 (छिहत्तर हजार) हो गयी और निर्माण संगठन को मिलाकर वर्तमान अर्थात् 2021-22 में हिन्दी पुस्तकालयों की संख्या 39 (उनतालीस) है तथा पुस्तकों की संख्या 104690 (एक लाख चार हजार छह सौ नब्बे) है। प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि पूर्वोत्तर सीमा रेल का मुख्यालय स्थित हिन्दी पुस्तकालय पूर्वोत्तर राज्यों में सबसे बृहत एवं सम्पन्न हिन्दी पुस्तकालय माना जाता है। इस पुस्तकालय में संग्रहित संदर्भ ग्रंथ शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी माना जाता है। इसके व्यवस्थित संचालन के लिए अंशकालिक पुस्तकाध्यक्ष हैं।
3. **प्रशिक्षण** - जैसे हास्य अभिनेता श्री राजू श्रीवास्तव एक विज्ञापन देते हुए कहते हैं - "पेट सफा तो हर रोग दफा" ठीक उसी प्रकार "रेलकर्मी हिंदी में प्रशिक्षित, तो हिंदी में कार्य सुनिश्चित"। मार्च, 2022 तक पूर्वोत्तर सीमा रेल तथा निर्माण संगठन मिलाकर कुल 6411 कर्मचारियों में से 643

कर्मचारी प्रवीणता प्राप्त हैं, 2891 कर्मचारी कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हैं, 2877 कर्मचारी प्रशिक्षण के लिए शेष हैं, जिसमें से 67 कर्मचारी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। आशा की जाती है कि योजनाबद्ध तरीके से यथाशीघ्र शेष कर्मचारियों का हिंदी प्रशिक्षण का कार्य पूरा कर लिया जाएगा।

4. **मूल पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग** - "ग" क्षेत्र के लिए लक्ष्य 55 प्रतिशत है। महाप्रबंधक,मुख्यालय/ मालीगाँव तथा महाप्रबंधक/निर्माण कार्यालय मिलाकर मार्च, 2022 तक "क" क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों को भेजे गए कुल 634 पत्रों में से 430 पत्र हिंदी में भेजे गए अर्थात् हिंदी में भेजे गए पत्रों का प्रतिशत 67.82 रहा। "ख" क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों को भेजे गए कुल 386 पत्रों में से 232 पत्र हिंदी में भेजे गए अर्थात् हिंदी में भेजे गए पत्रों का प्रतिशत 60.10 रहा। ठीक इसी प्रकार "ग" क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों को भेजे गए कुल 1431 पत्रों में से 910 पत्र हिंदी में भेजे गए अर्थात् हिंदी में भेजे गए पत्रों का प्रतिशत 63.45 रहा।

5. **हिंदी में टिप्पणी/नोटिंग** - लक्ष्य 30 प्रतिशत है। मार्च, 2022 तक महाप्रबंधक, मुख्यालय/ मालीगाँव तथा महाप्रबंधक/ निर्माण कार्यालय मिलाकर फाइलों पर कुल 2978 टिप्पणियाँ लिखे गए जिसमें से 1544 टिप्पणियाँ हिंदी में लिखी गईं। इस प्रकार हिंदी में लिखे गए टिप्पणियों का प्रतिशत 51.84 रहा।

भारत सरकार की राजभाषा नीति को पूर्वोत्तर सीमा रेल में समग्र रूप से कार्यान्वित करने के लिए इस रेल के हिन्दी संगठन के विकास की प्रक्रिया अभी भी जारी है। आशा की जाती है कि भाषा की दृष्टि से "ग" क्षेत्र में पड़ने वाली इस रेल की सेवा क्षेत्र की आवश्यकता को देखते हुए हिन्दी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सभी रिक्त पड़े पदों को यथाशीघ्र भरने के साथ-साथ हिन्दी कार्य में लगे कर्मचारियों की संख्या में यथावश्यक वृद्धि की जाएगी।

प्रशासनिक शब्दावली (अंग्रेजी-हिंदी).pdf

CLICK HERE TO OPEN